वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

मार्च 16-31, 2026

हिन्दू विश्व

प्रकृति नए कोंपलों व फूलों के नए परिधान में सजकर मनाती है

हिन्दू नववर्ष

@eHinduVishwa

/HinduVishwa

खूँटी (झारखण्ड) में विराट हिन्दू सम्मेलन को संबोधित करते
विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे तथा कार्यक्रम में उपस्थित मातृशक्ति व कार्यकर्ता

झण्डेवाला माता मंदिर के 43वें वार्षिकोत्सव एवं 56 भोग कार्यक्रम में उपस्थित
विहिप केन्द्रीय उपाध्यक्ष एवं श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के महामंत्री श्री चम्पत राय जी तथा मंदिर ट्रस्ट के पदाधिकारी

विजयवाड़ा (आ.प्र.) में विहिप सामाजिक समरसता की केन्द्रीय बैठक के अवसर पर उपस्थित विहिप केन्द्रीय सह संगठन महामंत्री श्री विनायकराव देशपाण्डे, अ.भा. समरसता प्रमुख श्री देवजीभाई रावत तथा प्रांतों से पधारे देशभर के प्रतिनिधि

हिन्दू विश्व
राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

सत्य को फलितार्थ करने वाले सत्ययज्ञ के पुष्टिकारक देव मित्रावरुणों! आप दोनों हमारे पुण्यदायी कार्यों (प्रवर्त्तमान सोमयाग) को सत्य से परिपूर्ण करें। अनेक कर्मों को सम्पन्न कराने वाले विवेकशील तथा अनेक स्थलों में निवास करने वाले मित्रावरुण हमारी क्षमताओं और कार्यों को पुष्ट बनाते हैं। – ऋग्वेद

16-31 मार्च, 2026
चैत्र कृष्ण - शुक्ल पक्ष
पिंगल-रौद्रसंवत्सर
वि. सं. - 2082-83, युगाब्द- 5127/28

सम्पादक
विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक
मुरारी शरण शुक्ल
मो. - 7217685539

परामर्शदाता
सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा,
विजय कुमार,
रवि पाराशर

व्यवस्थापक
श्री दूधनाथ शुक्ल
मो. - 09582555152

सज्जा
श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम, प्रभाग - 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110022-05
दूरभाष : 09582555152

011-26178992, 011-26103495
hinduvishva@vhp.org

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए	$ 75 USD
वार्षिक डाक व्यय सहित	
एक प्रति	15/-
वार्षिक	300/-
त्रिवर्षीय	750/-
पंचवर्षीय	1,200/-
दसवर्षीय	2,250/-
पन्द्रह वर्षीय	3,100/-

पत्रिका की सदस्यता हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें, उसका स्क्रीन शॉट और अपना पता व्यवस्थापक को 9582555152 नम्बर पर भेजें।

वैधानिक सूचना

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

कुल पेज - 28

05 प्रकृति नए कोंपलों व फूलों के नए परिधान में सजकर मनाती है हिन्दू नववर्ष

भारतीय नव संवत्सर काल चक्र का सनातन आयाम	08
हिंदू नववर्ष और उसकी वैज्ञानिकता	11
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा कालचक्र का पावन द्वार है नवसंवत्सर'	13
केरल में विशाल महामाघ महोत्सव	15
हिन्दू भारत का शरीर है तो हिन्दुत्व इसका प्राण है	16
क्या ग्रेट निकोबार बनेगा भारत का सिंगापुर या टूटेगा पर्यावरणीय संतुलन?	18
ब्रेन का एक फंक्शन है-मेधा	20
आदिवासियों के आरक्षण का अस्सी प्रतिशत हिस्सा हड़प रहे हैं ईसाई : मिलिंद परांडे	21
नई दिल्ली में अखिल भारतीय गोभक्त महिला सम्मेलन सम्पन्न	22
झण्डेवाला माता मंदिर का तैंतालिसवाँ वार्षिकोत्सव एवं छप्पन भोग कार्यक्रम	24
दक्षिण गुजरात में नव निर्मित मंदिर का लोकार्पण	25
महासभा के अध्यक्ष महेन्द्र नाहटा और प्रधान न्यासी सुरेश गोयल का अभिनंदन	26

सुभाषित

गुणाधिकान्मुदं लिप्सेत, अनुक्रोशं गुणाधमात्।
मैत्रीं समानादन्विच्छेत, न तापैरभिभूयते।।

अपने से अधिक गुण वालों से आनन्द प्राप्त करें, कम गुणवालों के प्रति दया-भाव रखें और समान गुण वालों से मित्रता की इच्छा करे-ऐसा करने वाले पुरुष संतापों से व्यथित नहीं होते।

होली का रंग और कट्टरता का जहर

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

भारत की साँस्कृतिक परंपरा में पर्व केवल उत्सव नहीं होते, वे समाज को जोड़ने और आपसी प्रेम को बढ़ाने का माध्यम भी होते हैं। होली ऐसा ही एक पर्व है, जिसमें रंग, उमंग और परस्पर स्नेह का भाव पूरे समाज को एक सूत्र में बाँधता है। किंतु अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि इसी आनंद और सौहार्द के पर्व पर उत्तम नगर में तरुण खटिक नामक युवक की हत्या केवल इस कारण कर दी गई कि उसकी बच्ची के हाथ से एक मजहबी पर होली का पानी पड़ गया था। यह घटना केवल एक व्यक्ति की हत्या नहीं है, बल्कि यह उस बढ़ती हुई मानसिकता की भयावह झलक है, जो समाज में कट्टरता, असहिष्णुता और हिंसा को जन्म दे रही है।

भारत की सभ्यता "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना पर आधारित रही है। यहाँ विविध आस्थाओं, सँस्कृतियों और परंपराओं के लोग सदियों से साथ रहते आए हैं। किंतु जब किसी साधारण सामाजिक परिस्थिति–जैसे किसी पर्व के दौरान रंग या पानी पड़ जाने पर किसी की हत्या कर दी जाए, तो यह केवल व्यक्तिगत क्रोध नहीं, बल्कि एक गहरे वैचारिक संकट का संकेत है। यह उस कट्टर मानसिकता का परिणाम है, जो समाज में सह–अस्तित्व की भावना को नकारती है और हिंसा को समाधान मानती है।

देश के विभिन्न हिस्सों में समय–समय पर ऐसी घटनाएँ सामने आती रही हैं, जहाँ धार्मिक कट्टरता के कारण सामान्य सामाजिक जीवन बाधित होता है। यह प्रवृत्ति न केवल चिंता का विषय है, बल्कि पूरे राष्ट्र के लिए चेतावनी भी है। यदि समाज में कट्टरता को खुली छूट मिलती रही, तो वह धीरे–धीरे सामाजिक शांति, विश्वास और सद्भाव को नष्ट कर देगी।

आज आवश्यकता है कि इस प्रकार की कट्टर और हिंसक मानसिकता के विरुद्ध स्पष्ट और कठोर संदेश दिया जाए। भारत की उदार और सहिष्णु परंपरा को किसी भी प्रकार की जिहादी या हिंसक विचारधारा के सामने झुकाया नहीं जा सकता। जो लोग धर्म के नाम पर समाज में भय, हिंसा और टकराव पैदा करना चाहते हैं, उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि भारत की सभ्यता हजारों वर्षों से विविधता और सहिष्णुता के आधार पर खड़ी है, और इसे किसी भी प्रकार की कट्टरता से डराया या दबाया नहीं जा सकता।

प्रशासन और कानून–व्यवस्था की भूमिका यहाँ अत्यंत महत्वपूर्ण है। ऐसी घटनाओं पर केवल औपचारिक कार्रवाई पर्याप्त नहीं होगी। यदि कोई व्यक्ति या समूह धार्मिक कट्टरता के नाम पर हिंसा करता है, तो उसके विरुद्ध कठोरतम कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए, ताकि यह स्पष्ट संदेश जाए कि भारत में कानून से ऊपर कोई नहीं है। साथ ही, मुस्लिम समाज के जिम्मेदार नेतृत्व और बुद्धिजीवियों को भी आत्ममंथन करना होगा। यदि कट्टर और हिंसक तत्वों को समय रहते नहीं रोका गया, तो उसका दुष्परिणाम पूरे देश को भुगतना पड़ेगा।

हिंदू समाज की परंपरा सहिष्णुता, धैर्य और समरसता की रही है। किंतु सहिष्णुता को कमजोरी समझना एक गंभीर भूल होगी। यदि समाज के धैर्य और शांति का बार–बार दुरुपयोग किया जाएगा, तो स्वाभाविक रूप से प्रतिक्रिया भी उत्पन्न होगी। इसलिए समय रहते यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि भारत के पर्व, परंपराएँ और साँस्कृतिक जीवन किसी भी प्रकार की कट्टरता के भय से दबने वाले नहीं हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि राष्ट्र एकजुट होकर इस प्रकार की हिंसक मानसिकता के विरुद्ध खड़ा हो। भारत की धरती पर न तो धार्मिक आतंक के लिए कोई स्थान है और न ही उन विचारों के लिए जो समाज को बाँटने और भय का वातावरण बनाने का प्रयास करते हैं।

होली का संदेश प्रेम, आनंद और भाईचारे का है–न कि घृणा और हिंसा का। इसलिए यह समय है कि राष्ट्र स्पष्ट शब्दों में यह कहे कि भारत की सहिष्णुता को कमजोरी समझने की भूल न की जाए। जो भी तत्व समाज में कट्टरता और हिंसा का विष फैलाने का प्रयास करेंगे, उन्हें कानून और समाज दोनों के स्तर पर कठोर प्रतिरोध का सामना करना पड़ेगा। यही इस दुखद घटना से मिलने वाला सबसे महत्वपूर्ण संदेश है।

हिंदू समाज की परंपरा सहिष्णुता, धैर्य और समरसता की रही है। किंतु सहिष्णुता को कमजोरी समझना एक गंभीर भूल होगी। यदि समाज के धैर्य और शांति का बार–बार दुरुपयोग किया जाएगा, तो स्वाभाविक रूप से प्रतिक्रिया भी उत्पन्न होगी। इसलिए समय रहते यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि भारत के पर्व, परंपराएँ और साँस्कृतिक जीवन किसी भी प्रकार की कट्टरता के भय से दबने वाले नहीं हैं।

प्रकृति नए कोंपलों व फूलों के नए परिधान में सजकर मनाती है हिन्दू नववर्ष

मुरारी शरण शुक्ल
सह सम्पादक हिन्दू विश्व

ऋग्वेद की शाकल शाखा के ऐतरेय ब्राह्मण (3.44) में लिखा है कि अंतरिक्ष में सूर्य कभी न उदित होता है, न अस्त होता है। सूर्य जब भूमंडल के एक भाग को प्रकाशित करता है, दूसरे भाग में अंधकार (रात्रि) हो जाता है और जब दूसरे भाग को प्रकाशित करता है, तो उसके विपरीत वाले भाग में अंधकार (रात्रि) आ जाता है। यही बात आर्यभट्ट ने भी अपने ग्रन्थ आर्भट्टियम् (2/13) के गोलाध्याय में कहा है कि सूर्य सदैव विद्यमान रहते हैं। जब सूर्य के सामने लंका वाला भाग होता है, तब वहाँ दिन व धरती के दूसरे गोलार्द्ध में रात्रि होती है। ऋग्वेद (1/35/7 व 1/84/15) में सूर्य को अपने प्रकाश से पृथ्वी व चन्द्रमा को प्रकाशित करने वाला कहा गया है। यह भी वर्णन मिलता है कि सूर्य क्रम से भूमंडल के सभी भाग को आलोकित करता है। ऋग्वेद (1/50/4) में लिखा है कि सूर्य अपनी कक्षा में गतिशील है और एक महासूर्य की परिक्रमा कर रहा है। ऋग्वेद (10/89/4) में उल्लेख है कि सूर्य की ऊष्मा से अल्प दबाब का केन्द्र बनता है, इससे मानसून का आगमन होता है। इंद्र एवं सूर्य के प्रकाश की ऊष्मा की ही महत्ता से समुद्र का जल वाष्पित होकर आकाश में जाकर वर्षा का कारण बनता है। वेदों में सूर्य समेत सभी ग्रहों की गति–घूर्णन और परिक्रमण दोनों का वर्णन है, इन्हीं खगोलीय गतियों के कारण ऋतु परिवर्तन होता है, ऋतु के सुनिश्चित क्रम के कारण ही विविध प्रकार के जीव–जन्तुओं का सृजन, पोषण, पालन, प्रजनन और संवर्द्धन होता है।

हिन्दू नववर्ष की वैज्ञानिकता के मुख्य बिंदु

- **खगोलीय आधार (Astronomical Basis)** : हिन्दू कैलेंडर 'चंद्र–सौर' पद्धति पर आधारित है जिसमें पृथ्वी, चंद्रमा और सूर्य की स्थिति का सटीक विश्लेषण होता है।
- **बसंत विषुव (Vernal Equinox)** : चैत्र माह के आसपास (मार्च–अप्रैल) सूर्य की किरणें पृथ्वी पर बराबर पड़ती हैं, जिससे दिन और रात की लंबाई लगभग बराबर (लगभग 21 मार्च) होती है, जो प्राकृतिक नए साल का प्रतीक है।

चैत्र माह– वसंत और वर्ष का आरम्भ काल

सुश्रुत संहिता के सूत्रस्थानम् के अध्याय 6, श्लोक 4 में वर्णन है कि आदित्य और चन्द्रमा की गतियों के कारण काल का अंतरण और विभाग होता है। श्लोक 5 में सूर्य के उत्तरायण और दक्षिणायन होने तथा मेषादि राशियों के समक्ष में होने वाले संक्रमण का वर्णन है। श्लोक 6 में ऋतुओं और मास के क्रम का विवरण है। यहाँ महिनों के वैदिक और संस्कृत दोनों नामों का विवरण है। चैत्र माह को मधुमास की संज्ञा दी गई है। मधुमास का

सीधा सम्बन्ध नवीन पत्रों–कोंपलों और फूलों से है। यदि आप आम के नये पत्तों को देखेंगे, तो वो लसलसे–मीठे पदार्थों से सने होते हैं। अर्थात् वसंत (किशोरावस्था–तरुणाई) ऐसा ही मधुर और स्निग्ध होता है, यह प्रकृति की सृजनात्मक पुष्पन की अवस्था से युक्त अल्हड़ता केवल आम के वृक्षों की अवस्था न होकर पूरी प्रकृति की तात्कालिक ऋतु जनित संस्कृति को ही नवीनता प्रदान कर देता है। यहाँ प्रकृति अपनी पूर्णता में नवीनता को प्राप्त कर रही होती है, पूरी सृष्टि ही नई हो जाती है, सृजन और नवीन उत्पादन के लिए सिद्ध हो जाती है, प्रकृति के इस सुखद तरूणाई को ही शास्त्र नववर्ष के रूप में प्रसिद्ध कर देते हैं। यह नवीनता का विवरण केवल शास्त्रों में ही नहीं जगत के विस्तृत कैनवास पर सभी दिशाओं में प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर भी होता है। आधुनिक विज्ञान भी मधुमास (चैत्र मास के शुक्ल पक्ष) में प्रकृति के नवीन हो जाने के विभिन्न वैज्ञानिक पहलुओं और सूक्ष्मतम परिवर्तनों को सत्यापित करने लग गया है। यह नयापन का वह अद्भुत बिन्दु है, जहाँ पहुँचकर हिन्दू अपना नववर्ष मनाता है। प्रकृति से तादात्म्य स्थापित करके स्वयं को, अपने कुटुम्ब समेत समाज और राष्ट्र को भी एक बार पुनः नवीनता से युक्त कर देता है।

हिन्दू नववर्ष (विक्रम संवत – चैत्र शुक्ल प्रतिपदा) वैज्ञानिक रूप से खगोलीय घटनाओं, ऋतु परिवर्तन और प्रकृति के पुनरुत्थान (बसंत) से जुड़ा है। यह केवल तिथि नहीं बल्कि पृथ्वी की सूर्य के सापेक्ष स्थिति (बसंत विषुव) का सूचक है, जब दिन–रात बराबर होते हैं, जिसे वैज्ञानिक रूप से नया साल कहा जा सकता है। यह सौर और चंद्र कैलेंडर (Luni&solar) पर आधारित है, जो इसे सटीक बनाता है।

सौर, चन्द्र एवं हिन्दू पंचांग

पूरी दुनियाँ में दो प्रकार की काल गणना पद्धतियाँ (पंचांग) प्रचलित हैं, सौर पंचांग और चन्द्र पंचांग। सौर पंचांग में सूर्य की गति के आधार पर कालगणना की जाती है, जबकि चन्द्र पंचांग में चन्द्रमा की गति के आधार कालगणना की जाती है। ईसाईयों का ग्रेगोरियन कैलेंडर सूर्य की गति के आधार पर पूरे वर्ष भर के दिनों

की गिनती करता है। मुसलमानों का हिजरी कैलेंडर चन्द्रमा की गति पर आधारित है, इसीलिए चांद देखकर अपने त्योहार निर्धारित करता है इस्लाम। दोनों की तुलना करने से पता चलता है कि सौर पंचांग में वर्ष में 365 दिन छः घंटे होते हैं, जबकि चन्द्र पंचांग में लगभग 355 दिन होते हैं। इसी कारण से हिजरी कैलेंडर में कोई भी तिथि अगले वर्ष एक महिना पहले ही आ जाती है। हमारा हिन्दू पंचांग सौर और चन्द्र दोनों पंचांग का समन्वित स्वरूप है, इस पंचांग में सूर्य और चन्द्रमा दोनों की गतियों का सायुज्य बिठाकर कालगणना किया जाता है। इस कारण से प्रति तीन वर्ष में हमारे पंचांग में पुरूषोत्तम मास (अधिकमास) होता है। इसके माध्यम से हम दोनों पंचांगों के अंतर को सफलतापूर्वक ठीक कर लेते हैं।

हिन्दू पंचांग केवल दिन नहीं गिनता

हिन्दू पंचांग केवल दिनों की गिनती नहीं करता है, तो हम पन्द्रह दिनों के चन्द्र आधारित पक्ष, सात दिनों के ग्रहों के नाम आधारित सप्ताह, दिन–रात्रि (अहोरात्र व तिथियाँ), प्रहर, मुहूर्त, घटी, पल, विफल की भी गणना करते हैं। हमारी कालगणना अल्पतम से विशालतम समय की गणना तक विस्तृत है, जिसमें 'त्रुटि' (1 सैकंड का 33750वाँ भाग) से लेकर कल्प (1000 महायुग) अर्थात 4 अरब 32 करोड़ सौर वर्ष तक की गणना का विधान है। ऐसी सुविधा या विधान विश्व की अन्य किसी भी कालगणना में नहीं है।

प्रकृति का नया चक्र (Nature's Cycle) : यह वर्ष का वह समय है जब प्रकृति में जीवन का नया आरम्भ होता है–पतझड़ खत्म होता है और वसंत ऋतु में पेड़ों पर नए पत्ते आते हैं, जो स्वास्थ्य और समृद्धि के लिए उपयुक्त समय है।

सूर्योदय से शुरुआत (Sunrise Start) : नववर्ष का आरम्भ अर्धरात्रि के स्थान पर सूर्योदय से होता है, जो दिन की पहली किरण के स्वागत का प्रतीक है और वैज्ञानिक दृष्टि से अधिक तार्किक है।

स्वास्थ्य और आयुर्वेद (Health & Ayurveda) : यह समय आयुर्वेद के अनुसार ऋतु संधिकाल (दो ऋतुओं का मिलन) है। इस समय नीम के फूल और पत्तियों का सेवन स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभप्रद होता है।

कृषि चक्र (Agricultural Cycle) : यह फसल की कटाई (रबी फसल) का समय होता है, जो किसानों के लिए नई उम्मीद लेकर आता है, जिससे यह कृषि वैज्ञानिकता से भी जुड़ा है।

विक्रम संवत : सम्राट विक्रमादित्य द्वारा शुरू किया गया यह कैलेंडर ईसा पूर्व 57 ईस्वी में शुरू हुआ था, जो ग्रेगोरियन कैलेंडर से 57 वर्ष आगे चलता है और खगोलीय गणनाओं को प्रमुखता देता है।

हिन्दुओं का नव वर्ष 'वर्ष प्रतिपदा' से आरंभ होता है। यही हमारा राष्ट्रीय नववर्ष भी है। 'वर्ष प्रतिपदा' अर्थात् नव वर्ष का प्रारंभ चैत्र–शुक्ल प्रतिपदा से होता है। चैत्र–शुक्ल प्रतिपदा को ही मानव सृष्टि का आरंभ हुआ था, इसीलिए इसे सृष्टि संवत् या ब्रह्म संवत् भी कहते हैं। ज्योतिष विद्या के प्रसिद्ध ग्रंथ 'हिमाद्रि' से इसकी पुष्टि होती है–

'चैत्रमासि जगद् ब्रह्म ससर्जेप्रथमोऽहनि।
शुक्ल पक्षे समग्रन्तु सदा सूर्योदये गति।'

अर्थात् चैत्र मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम दिवस सूर्योदय काल में सृष्टिकर्ता ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की। भास्कराचार्य अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'सिद्धांत शिरोमणि' में लिखते हैं कि चैत्र मास को शुक्ल पक्ष के प्रारंभ में रविवार के दिन से मास, वर्ष व युग एक साथ प्रारंभ हुए, इसीलिए भारत में प्रचलित सभी संवत् चैत्र–शुक्ल प्रतिपदा से ही आरंभ हुए। इनमें सम्राट् विक्रमादित्य का **'विक्रमी संवत्'** सर्वाधिक लोकप्रिय और प्रचलित हुआ। विक्रमी संवत् सूर्य सिद्धांत पर आधारित है। यदि **सृष्टि संवत्** के आरंभ से आज तक की गणना की जाए तो सूर्य सिद्धांत के अनुसार एक दिन का भी अंतर नहीं पड़ता। अतः विक्रम संवत् शुद्ध वैज्ञानिक सत्य पर टिका हुआ है। प्रचलित संवतों में सबसे प्राचीन **युगाब्द** है। युगाब्द

कलियुग के आरंभ का सूचक है, जिसे पांच हजार से अधिक वर्ष हो गए हैं। सम्राट् विक्रमादित्य ने आक्रमणकारी शकों को परास्त करके भारत भूमि से निकाल बाहर किया था, उसी की स्मृति में आज के दिन विक्रमी संवत् प्रारंभ हुआ और विक्रमादित्य ने 'शकारि' उपाधि धारण की। विक्रमी संवत् कलि संवत् के 3044 वर्ष बाद, शाके शालिवाहन संवत् के 135 वर्ष पूर्व और सन् ईस्वी के 57 वर्ष पूर्व आरंभ हुआ था। आज भी भारतीय समाज धार्मिक, सामाजिक और मांगलिक कार्यों के शुभ अवसर पर संवत् और भारतीय तिथियों का प्रयोग करता है।

विक्रम संवत 2083 (हिंदू नव वर्ष 2026) का आरंभ 19 मार्च 2026 (गुरुवार) को होगा, जिसे **रौद्र संवत्सर** कहा जाएगा। यह वर्ष 13 महीनों का होगा, जिसमें ज्येष्ठ मास का अधिक मास (17 मई से 15 जून) शामिल है। इस वर्ष के राजा बृहस्पति और मंत्री मंगल होंगे।

murari.shukla@gmail.com

पंजाब में धर्मांतरण से उत्पन्न समस्याओं का समाधान धर्मांतरित हिन्दुओं की घर वापसी ही है : नीरज दौनेरिया

बजरंग दल–पंजाब की तीन दिवसीय प्रांत बैठक नीलकंठ महादेव मंदिर, सिंगला, लुधियाना में आयोजित हुई, जिसमें वर्तमान चुनौती और समाधान सत्र में रहना हुआ। बैठक में कार्यकर्ताओं को बजरंग दल राष्ट्रीय सह संयोजक मा. विवेक कुलकर्णी जी का भी मार्गदर्शन मिला। बैठक में विश्व हिंदू परिषद प्रांत अध्यक्ष मा. सुभाष गुप्ता जी, क्षेत्र संयोजक सरदार जसवीर सिंह शीरा जी, प्रांत सह मंत्री प्रशांत जोशी जी, बजरंग दल पंजाब प्रांत संयोजक मोहित गर्ग जी, चंडीगढ़ व लुधियाना विभाग संगठन मंत्री विकास बिश्नोई जी सहित प्रांत टोली, विभाग तथा जिला स्तर के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

भारतीय नव संवत्सर काल चक्र का सनातन आयाम

कान्ती लाल सुथार

भारतीय काल–गणना की परम्परा में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का स्थान अत्यन्त विशिष्ट और बहुआयामी है। यह केवल तिथियों की गणना नहीं बल्कि सृष्टि, ऋतु, मनुष्य और धर्म के बीच आद्य स्पन्दन का प्रतीक है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होने वाला नव संवत्सर इस संवाद का उद्घोष है। यह दिन केवल एक कैलेंडरी आरंभ नहीं बल्कि भारतीय सभ्यता की दार्शनिक दृष्टि, खगोलिक परिपक्वता और साँस्कृतिक एकात्मता का प्रतीक है। वेद, ब्राह्मण ग्रंथ, पुराण, ज्योतिष–शास्त्र और ऐतिहासिक संवत–परंपराएँ–सभी मिल कर इस तिथि को वर्षारंभ का प्राकृतिक और दार्शनिक आधार प्रदान करती हैं।

शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है–

"वसन्तो वै वर्षस्य मुखम्"
अर्थात् वसंत वर्ष का मुख है।

भारतीय चिंतन में 'मुख' केवल प्रारंभ नहीं बल्कि अभिव्यक्ति का केंद्र है। वसंत ऋतु प्रकृति के पुनरुत्थान का काल है। वृक्षों में नवपल्लव, खेतों में नवीन अन्न, और वातावरण में संतुलित ताप। चैत्र मास इसी वसंत का प्रथम पूर्ण चंद्रमास है। अतः वैदिक दृष्टि से वर्ष का प्रारंभ चैत्र से होना स्वाभाविक और शास्त्र सम्मत है। भारतीय दर्शन में काल और ब्रह्म के सम्बन्ध को सर्वोत्तम अभिव्यक्ति अथर्ववेद ने दी है– **संवत्सरो वा अजः। (अथर्ववेद, ११.१.२)**

अर्थात् 'संवत्सर ही अज (अजन्मा, अनादि ब्रह्म) है।' यह महावाक्य संवत्सर को केवल एक कालमापक इकाई नहीं मानता, यह उसे ब्रह्म–तत्त्व के साथ अभिन्न स्थापित करता है। काल की इस आध्यात्मिक व्याख्या के कारण ही भारतीय नव वर्ष का उत्सव एक गहरी साधना का रूप धारण करता है, यह मात्र आमोद–प्रमोद नहीं, आत्म–नवीनीकरण का पर्व है। सूर्यसिद्धांत में इसे इस प्रकार परिभाषित किया गया है – **"सर्वर्तुपरितस्तु स्मृतः संवत्सरौ बुधैः"** अर्थात् वह काल जिसमें सभी ऋतुएँ पूर्ण रूप से समाहित हों, वही संवत्सर कहलाता है।

ब्रह्मपुराण जो अठारह महापुराणों में प्रथम और सर्वाधिक प्राचीन माना जाता है, इस तथ्य की पुनः पुष्टि करता है। पुराण की भाषा में इस तिथि को 'युगादि' कहा गया है अर्थात् युग का आदि, काल का आरम्भ। यह संज्ञा बताती है कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा केवल एक वर्ष का आरम्भ नहीं, एक सम्पूर्ण साँस्कृतिक युग–चक्र का प्रवेश–द्वार है।

"चैत्रमासि जगद्ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि,
शुक्लपक्षे समग्रे तु तदा सूर्योदये सति।"

इसी प्रकार भविष्य पुराण में भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सृष्टि का प्रथम दिन माना गया है। इस श्लोक में तीन संकेत महत्त्वपूर्ण हैं। पहला, मास चैत्र है जो वसन्त ऋतु का प्रतीक है, दूसरा पक्ष शुक्ल है अर्थात् चन्द्रमा बढ़ रहा था और तीसरा क्षण सूर्योदय का था – जब प्रकाश अन्धकार पर विजयी होता है। तीनों तत्त्व मिलकर एक ऐसे क्षण का निर्माण करते हैं जो खगोलीय दृष्टि से भी परम शुभ है। यहाँ सृष्टि का तात्पर्य केवल ब्रह्मांडीय घटना नहीं बल्कि यह 'नवीनता' का दार्शनिक सिद्धांत है, जहाँ कालचक्र पुनः प्रारंभ होता है।

महान भारतीय खगोलशास्त्री और गणितज्ञ वराहमिहिर ने अपनी बृहत्संहिता में पंचाङ्ग–गणना का विस्तृत विवेचन किया है। उनकी दृष्टि में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा वह बिन्दु है, जहाँ से समस्त ग्रह–नक्षत्रों की स्थिति का पुनर्निर्धारण होता है। भारतीय पंचांग का आधार सौर और चंद्र गतियों का समन्वय ही है। सूर्य सिद्धांत में सूर्य की गति, राशिचक्र और विषुव बिंदुओं का विस्तृत गणितीय निरूपण मिलता है। चंद्र मास के शुक्ल पक्ष से शुरू हुए चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के समय सूर्य वसंत विषुव के निकट होने से दिन–रात समान हो जाते हैं, ऋतुओं की समवेत स्थिति से प्रकृति संतुलित अवस्था में होती है। यह समय जैविक, कृषि और पर्यावरणीय दृष्टि से नवचक्र का आरंभ है। अतः यह केवल धार्मिक चयन नहीं बल्कि वैज्ञानिक अनुकूलता पर आधारित निर्णय है। प्रसिद्ध गणितज्ञ और खगोलशास्त्री भास्कराचार्य रचित ग्रंथ 'सिद्धान्त शिरोमणि' में इसके वैज्ञानिक महत्त्व का विवरण इस प्रकार मिलता है।

'चैत्रसितादिर्वारो मासो वर्षं तथा युगम्।
सृष्ट्यादौ लंकायां समं प्रवृत्तं दिनपतेः।।'

अर्थात् चैत्रसितादिर्वारोः सृष्टि के प्रारंभ में 'चैत्र' मास के 'शुक्ल पक्ष' (सित) की प्रतिपदा को पहला 'वार' (रविवार) था। मासो वर्षं तथा युगम्ः इसी दिन से मास (महीना), वर्ष और 'युग' (कलियुग आदि) की गणना एक साथ शुरू हुई। सृष्ट्यादौ लंकायांः सृष्टि के आदि (शुरुआत) में, लंका (प्राचीन शून्य रेखा या Prime Meridian) पर। समं प्रवृत्तं दिनपतेः सूर्योदय के साथ ही यह सारा काल चक्र एक साथ प्रवृत्त या क्रियान्वित हुआ।

भारतीय खगोल विज्ञान के अनुसार समय की गणना तब से मानी जाती है, जब सूर्य, चंद्रमा और अन्य ग्रह एक ही सीध (Alignment) में थे। 'लंका' यहाँ वर्तमान श्रीलंका नहीं बल्कि उज्जैन की रेखा पर स्थित वह काल्पनिक बिंदु है, जिसे प्राचीन भारतीय भूगोल में 'शून्य रेखा' (Prime Meridian) माना जाता था। उपरोक्त श्लोक भारतीय कैलेंडर (पंचांग) के शून्य बिंदु (Zero Point) को परिभाषित करता है। भारतीय दर्शन में काल चक्रीय है, रेखीय नहीं। नव संवत्सर इस चक्रीय काल–दर्शन का मूर्त रूप है – जहाँ अंत ही आरंभ है और आरंभ ही पुनर्जन्म। भारतीय पंचांग में किसी भी मास का प्रारम्भ कृष्ण पक्ष से होता है, लेकिन नववर्ष का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही होता है, क्योंकि अमावस्या के बाद बढ़ता चंद्राकर उन्नति का प्रतीक माना जाता है, साथ ही अधिकमास का समायोजन भी हो जाता है।

सम्राट विक्रमादित्य ने 57 ईसा पूर्व (BCE) में शकों पर विजय प्राप्त करने के उपलक्ष्य में जो संवत् आरम्भ किया, उसका प्रारम्भ बिन्दु चैत्र शुक्ल प्रतिपदा ही था। यह संयोग नहीं था – यह एक सचेत निर्णय था, जो शास्त्र–सम्मत परम्परा का सम्मान करता था। इसी प्रकार 78 ईसवी में शालिवाहन शक का प्रारम्भ भी इसी तिथि से हुआ। इन दोनों तथ्यों से सिद्ध होता है कि भारतीय शासक केवल राजनीतिक शक्ति के धारक नहीं थे – वे साँस्कृतिक ज्ञान–परम्परा के संरक्षक भी थे। नव संवत्सर का चुनाव उनके इसी साँस्कृतिक बोध का प्रतिफलन है।

संस्कृत साहित्य में वसन्त और नव वर्ष का अत्यन्त समृद्ध चित्रण है। कालिदास का 'ऋतुसंहार' वसन्त की इसी महिमा का गान है। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का प्रेम वसन्त के परिवेश में ही खिलता है। कवि ने सटीक कहा है : 'जहाँ प्रकृति उत्सव मनाती हो, वहाँ मनुष्य का मौन रहना असम्भव है।' चैत्र शुक्ल प्रतिपदा पर प्रकृति स्वयं उत्सव में होती है और भारतीय सँस्कृति ने इसी प्रकृति–उत्सव को अपना नव वर्ष बना लिया। यह कितना अद्भुद संयोग है।

आधुनिक विज्ञान पुष्टि करता है कि चन्द्रमा की स्थिति पृथ्वी के महासागरों के ज्वार–भाटे को, पौधों की वृद्धि को और मानव शरीर की जैविक लय (Circadian rhythm) को प्रभावित करती है। शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा का वर्धमान प्रकाश – वृद्धि, विकास और नव –ऊर्जा का प्रतीक है। नए वर्ष का आरम्भ इस वर्धमान चन्द्र के साथ होना एक गहरी मनोवैज्ञानिक और जैव–वैज्ञानिक संगति को इंगित करता है। यही वह समय है जब कीट–पतंगे शीत –निद्रा से जागते हैं। मिट्टी का तापमान बीज–अंकुरण के लिए आदर्श होता है। पक्षियों में प्रजनन–काल आरम्भ होता है। मानव शरीर में भी नई स्फूर्ति और ऊर्जा का अनुभव होता है।

चैत्र वसंतोत्तर कृषि चक्र का आरंभ है। रबी की फसल कटने लगती है। यह काल आर्थिक गतिविधियों के पुनरारंभ का है। व्यापारिक बहीखाते (हिसाब–किताब) इस दिन से प्रारंभ करने की परंपरा इसी व्यावहारिक यथार्थ से जुड़ी है। वसंत का वातावरण मानव मन पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। तापमान संतुलित, आकाश निर्मल और प्रकृति सजीव होती है। इस कारण नववर्ष का आरंभ आशा और सृजनशीलता से जुड़ता है। आयुर्वेद में भी वसंत ऋतु को वनस्पति में नई वृद्धि से लाभ लेते हुए स्वास्थ्य–शोधन और संतुलन का काल माना गया है। यह सम्पूर्ण प्रकृति का पुनरुज्जीवन है। ऐसे वातावरण में नव वर्ष का उत्सव मनाना न केवल साँस्कृतिक परम्परा है, अपितु प्रकृति की लय के साथ मनुष्य के जीवन को समस्वर करने का एक गहरा आध्यात्मिक अनुष्ठान है।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही चैत्र नवरात्रि का आरम्भ होता है। नव वर्ष का प्रारम्भ और शक्ति की उपासना एक साथ होना – यह एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण संयोग है। इस सम्मिलन का गहरा आशय है – नया वर्ष शक्ति के साथ, ऊर्जा के साथ और दिव्य चेतना के आह्वान के साथ आरम्भ हो। यह भारतीय मानस की उस विशेषता को उजागर करता है, जो हर शुभ कार्य में पहले परम शक्ति का स्मरण करती है।

भारत की साँस्कृतिक विविधता आश्चर्यचकित करती है, किन्तु उससे भी अधिक आश्चर्यजनक है उसमें निहित एकात्मता। सृष्टि प्रारंभ के साथ सतयुग का आरंभ भी इसी दिन से हुआ था। मान्यता है कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन ही भगवान श्री विष्णु जी का मत्स्य

अवतार हुआ था। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम का राज्याभिषेक भी इसी शुभ दिन किया गया था। युगाब्द संवत्सर के प्रथम दिन ही युधिष्ठिर का भी राज्याभिषेक हुआ था। कलियुग के प्रथम सम्राट परीक्षित भी इसी दिन सिंहासनारूढ़ हुए थे। सिंध प्रांत के प्रसिद्ध समाज सुधारक और सिंधियों के परम् पूजनीय वरुणावतार संत झूलेलाल इसी दिन अवतरित हुए थे। इसी शुभ दिन सिख धर्म के द्वितीय गुरु श्री अंगददेव का जन्म दिन भी है। शुभ हिन्दु नव संवत्सर के दिन ही समाज को नयी राह दिखाने के लिए प्रसिद्ध समाज सुधारक और विचारक स्वामी दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की थी। संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार का जन्म भी इसी दिन हुआ था। काल ही नहीं प्रतिपदा ने देश के विभिन्न क्षेत्रों को भी एकता के सूत्र में जोड़ा है। कश्मीर में नवरेह, गुजरात में गुड़ी पड़वा, महाराष्ट्र में गुढ़ी पाडवा, बंगाल में पॉइला बैशाख, मणिपुर में सजिबू नोंगमा पानबा, आन्ध्र और तेलंगाना में उगादि, कर्नाटक में युगादि, सिन्ध में 'चेटी चंड' (चैत्र का चंद्र) (झूलेलाल की जयन्ती) के रूप में और राजस्थान और उत्तर भारत में नव संवत्सर – विक्रम संवत् के नए वर्ष का स्वागत किया जाता है। ये सभी भिन्न नाम, उत्सव की भिन्न बाह्य अभिव्यक्तियाँ जरुर हैं; किन्तु मूल भावना एक है – सृष्टि के पहले दिन को कृतज्ञता, हर्ष और नव–संकल्प के साथ स्मरण करना। ये नाम स्वयं इस बात के प्रमाण हैं कि भारतीय सँस्कृति की विविधता में भी यह मूल धारा एकसूत्री है।

प्राचीन मेसोपोटामिया (Babylon) में 'अकीतु' उत्सव वसन्त विषुव पर मनाया जाता था। ईरानी 'नौरोज' आज भी मार्च में, वसन्त विषुव पर ही मनाया जाता है। प्राचीन मिस्र का नव वर्ष नील नदी के उफान के साथ प्रारम्भ होता था। सेल्टिक और नॉर्डिक सँस्कृतियों में भी वसन्त को नव–जीवन का प्रतीक माना गया। आज पश्चिमी जगत में नव वर्ष जनवरी की शीत–निशा में, कृत्रिम आतिशबाजी के बीच प्रारम्भ होता है – जब प्रकृति निद्रित होती है, पृथ्वी हिमाच्छादित होती है और जीवन अपनी गहरी तंद्रा में डूबा होता है। इसके विपरीत भारतीय नव वर्ष – चैत्र शुक्ल प्रतिपदा – वसन्त की उस बेला में आता है, जब धरती अपना श्रृंगार करती है, आम्र–मञ्जरियाँ महकती हैं, कोकिल की कूक दिशाओं को भर देती है और प्रकृति स्वयं नव जीवन का उत्सव मनाती है। यही वह संयोग है, जो भारतीय नव वर्ष को प्रकृति–सम्मत और वैज्ञानिक बनाता है।

प्रतिपद्यदि चैत्रस्य शुक्ला संवत्सरादिका।
तस्यां सर्वं प्रकुर्वीत यदुक्तं विधिपूर्वकम्ज्ञा।।

भविष्य पुराण के अनुसार चैत्र प्रतिपदा को 'संवत्सर पूजा' करने से पूरे वर्ष सुख–समृद्धि बनी रहती है। नव संवत्सर साँस्कृतिक उत्सव और वैज्ञानिक संतुलन का संगम हैं, जहाँ ब्रह्मा का सृजन–मंत्र आज भी गूँजता है। यह तिथि भारतीय चिंतन की गहनता को प्रतिबिंबित करती है–सृष्टि का चक्रीय काव्य, जो मानव को प्रकृति के साथ सामंजस्य सिखाता है। इस प्रकार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा काल की अनंत धारा में एक शाश्वत संगीत है। शकों को हराकर शकारी की उपाधि धारण करने वाले सम्राट विक्रमादित्य ने चक्रवर्ती कहलाने हेतु अपनी प्रजा का ऋण तो उतार दिया, किंतु वैज्ञानिक विक्रम संवत् की स्थापना कर आज हमें उनका शाश्वत ऋणी बना दिया। आओ हम सभी नव संवत्सर का उत्सव मना कर अपने पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करें।

नवसंवत्सर कैसे मनाएँ ?

नवसंवत्सर का स्वागत केवल औपचारिक शुभकामनाओं तक सीमित न रहे, बल्कि इसे भारतीय परंपरा और प्रकृति–सम्मत जीवनदृष्टि के साथ मनाया जाए–

- प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नानादि से निवृत्त हों। घर में स्वच्छता रखें और मुख्य द्वार पर आम्र–पल्लव या बंदनवार सजाएँ, रंगोली बनाएँ। पुराने ध्वज के स्थान पर नव ध्वज का आरोहण करें।
- इस दिन नए संवत्सर का पंचांग श्रवण किया जाता है। विद्वान आचार्य वर्ष के नाम, ग्रह–स्थिति, वर्षफल और सामाजिक–आर्थिक संकेतों का वाचन करते हैं। इससे व्यक्ति को आगामी वर्ष की दिशा का बोध होता है।
- चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को घट– स्थापना का विशेष महत्व है। कलश में जल, आम्र–पल्लव और नारियल स्थापित कर देवी– देवताओं का पूजन करें। यह सृजन और समृद्धि का प्रतीक है।
- वसंत ऋतु के अनुरूप पीले या उज्ज्वल वस्त्र धारण करें। घर में हल्का, सात्त्विक एवं ऋतु–अनुकूल भोजन बनाएँ। नीम की कोमल पत्तियाँ (कुछ प्रदेशों में गुड़ के साथ) ग्रहण करना स्वास्थ्यवर्धक माना गया है–यह जीवन में सुख– दुःख दोनों को समभाव से स्वीकार करने का प्रतीक भी है।
- प्रदेशानुसार लोक–परंपराओं का पालन करें–महाराष्ट्र में गुड़ी स्थापना करना, दक्षिण भारत में उगादी पचड़ी, कश्मीर में नवरेह थाल, मणिपुर में सजिबू नोंगमा पानबा के अवसर पर पर्वतारोहण।
- नववर्ष पर अन्न, वस्त्र या अन्य आवश्यक वस्तुओं का दान करें। यह सामाजिक समरसता और करुणा की भावना को पुष्ट करता है।
- पुराने वर्ष की त्रुटियों का आत्मावलोकन करें और नए वर्ष के लिए परिवार सहित श्रेष्ठ आचरण का शुभ संकल्प लें। शुभ कार्यों, अध्ययन, व्यवसाय या नए उपक्रम का प्रारंभ इस दिन मंगलकारी माना गया है।

हिंदू नववर्ष और उसकी वैज्ञानिकता

पार्थसारथि थपलियाल

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ होने वाला भारतीय नव विक्रम संवत केवल एक तिथि परिवर्तन नहीं बल्कि प्रकृति, समाज और अध्यात्म तीनों के सामंजस्य का प्रतीक है। भारतीय कालगणना में वर्ष का प्रारम्भ ऐसे समय रखा गया है, जब प्रकृति स्वयं नवजीवन से भर उठती है। यही कारण है कि इस नव संवत्सर को "नववर्ष" कहने के साथ–साथ धार्मिक, साँस्कृतिक और खगोलीय दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण पर्व माना गया है। यदि इसे केवल परंपरा का विषय समझा जाए तो यह अपूर्ण दृष्टि होगी, वास्तव में यह पर्व भारतीय वैज्ञानिक सोच और प्राकृतिक चक्र की सूक्ष्म समझ का सजीव प्रमाण है। नव संवत्सर का शाब्दिक अर्थ है – नया वर्ष, (नया संकल्प और नया उत्साह)। भारतीय परंपरा में समय को केवल गणना की इकाई नहीं बल्कि जीवन की चेतना से जुड़ा तत्व माना गया है। शास्त्रों में लोकमान्यता है कि इसी दिन सृष्टि की रचना का आरम्भ हुआ अर्थात् ब्रह्मा ने सृजन कार्य प्रारम्भ किया। यह मान्यता प्रतीकात्मक रूप से यह संकेत देती है कि वर्ष का आरम्भ उस क्षण से किया जाए जब सृष्टि में पुनर्नवता का संचार हो। इस प्रकार नववर्ष केवल कैलेंडर का परिवर्तन नहीं बल्कि जीवन के पुनरुत्थान का पर्व है।

भारतीय कालगणना – चंद्र–सौर प्रणाली की वैज्ञानिकता – भारतीय पंचांग की विशेषता यह है कि वह चंद्रमा और सूर्य दोनों की गति पर आधारित है। पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा लगभग 365 दिन 5 घंटे 48 मिनट में पूरी करती है, जिसे सौर वर्ष कहते हैं। वहीं चंद्रमा पृथ्वी की परिक्रमा लगभग 354 दिन 8 घंटे 48 मिनट में करता है। इन दोनों के बीच लगभग 11 दिनों का अंतर होता है। यदि इस अंतर को समायोजित न किया जाए तो ऋतुएँ और तिथियाँ बिगड़ जाएँगी। इसी वैज्ञानिक समस्या का समाधान भारतीय ज्योतिष में अधिमास (पुरुषोत्तम मास) की व्यवस्था द्वारा किया गया है, यह लगभग 32 माह 16 दिन 8 घटी के बाद शुरू होता है। इसे दूसरी तरह से भी कहते हैं कि जब एक सौर मास में दो अमावस पड़ती हों, उसे मलमास या अधिमास कहते हैं। ऐसी स्थिति में एक वर्ष में 13 चँद्र मास होते हैं। एक अधिमास जोड़कर चंद्रवर्ष को सौरवर्ष के अनुरूप रखा जाता है। यह प्रणाली सिद्ध करती है कि भारतीय कालगणना केवल धार्मिक आस्था पर नहीं बल्कि खगोलीय गणना पर आधारित है।

दिन का आरम्भ – सूर्योदय से – भारतीय सँस्कृति में दिन का आरम्भ सूर्योदय से माना गया है। इसका वैज्ञानिक कारण यह है कि मानव शरीर की जैविक घड़ी (बायोलॉजिकल क्लॉक) सूर्य के प्रकाश से संचालित होती है। आधुनिक विज्ञान भी स्वीकार करता है कि मानव शरीर की हार्मोनल गतिविधियाँ सूर्योदय और सूर्यास्त से प्रभावित होती हैं। इसके विपरीत मध्यरात्रि से दिन बदलने की पाश्चात्य परंपरा स्थानीय परिस्थितियों (यूरोप के अक्षांश) से जुड़ी है। भारत जैसे देश में जहाँ सूर्य का प्रभाव जीवनचर्या से सीधा जुड़ा है, वहाँ सूर्योदय से दिन आरम्भ होना अधिक तर्कसंगत और वैज्ञानिक है। आश्चर्य की बात यह है कि विवेकांध भारतीय समाज मध्य रात्रि 12 बजे के बाद के समय को

(ए.एम के कारण) सुबह कहते हैं। जब लोगों की मति हरण होती है तब लोग सुबह, दोपहर, शाम और रात्रि की अवधारणा को भूल जाते हैं या उन्हें ज्ञान ही नहीं है।

ऋतु परिवर्तन और नववर्ष – चैत्र मास के आगमन पर ऋतु परिवर्तन स्पष्ट दिखाई देता है। शीत ऋतु का प्रभाव कम होकर ग्रीष्म की ओर संक्रमण होता है। खेतों में रबी की फसल पककर तैयार होती है। वृक्षों पर नई कोपलें फूटती हैं, आम में बौर लगते हैं और पक्षियों का कलरव वातावरण को संगीतमय बना देता है। यह समय प्रकृति के नवजीवन का होता है। यदि हम वैज्ञानिक दृष्टि से देखें, तो यही वह काल है, जब जैविक गतिविधियाँ तीव्र होती हैं। पौधों में प्रकाश संश्लेषण की दर बढ़ती है, मिट्टी की उर्वरता स्पष्ट दिखती है और मानव शरीर में भी ऊर्जा का संचार बढ़ता है। इसलिए वर्ष का आरम्भ इसी समय करना प्रकृति और मानव जीवन की लय को एकसूत्र में बाँधता है। चैत्र नवरात्रि और आत्मशुद्धि का विज्ञान नववर्ष के साथ ही चैत्र नवरात्रि का आरम्भ होता है। इन नौ दिनों में संयमित आहार, व्रत और साधना का विधान है। वैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो ऋतु परिवर्तन के समय शरीर को विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है। भारी, तैलीय और बासी भोजन से शरीर पर भार पड़ता है। व्रत, फलाहार और सात्विक भोजन शरीर की पाचन शक्ति को संतुलित करता है। इस प्रकार नवरात्रि का व्रत केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं बल्कि स्वास्थ्य–संरक्षण की वैज्ञानिक प्रक्रिया भी है।

नववर्ष की परंपराएँ और उनका वैज्ञानिक संकेत – नववर्ष पर घरों की सफाई, द्वारों पर आम्रपल्लव और ध्वज लगाने की परंपरा है। आम्रपल्लव को वैज्ञानिक दृष्टि से देखें, तो, उसमें वायु शुद्ध करने वाले तत्व पाए जाते हैं। घर की सफाई, रोगाणुओं को दूर करने का साधन है। सूर्य को अर्घ्य देना, प्रातःकाल स्नान करना – ये सभी क्रियाएँ शरीर और मन दोनों को शुद्ध करने का संकेत देती हैं। पंचांग श्रवण और वर्षफल कथन मनुष्य को समय की योजना बनाने की प्रेरणा देता है।

60 संवत्सरों का चक्र – खगोलीय गणना – भारतीय कालगणना में 60 संवत्सरों का एक चक्र माना गया है। यह चक्र बृहस्पति (गुरु) और सूर्य की संयुक्त गति के आधार पर निर्धारित होता है। बृहस्पति लगभग 12 वर्षों में एक राशि का चक्र पूरा करता है और 60 वर्षों में पाँच बार यह क्रम दोहरता है। इस गणना से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय पंचांग केवल लोकविश्वास नहीं बल्कि ग्रहों की गति पर आधारित गणितीय संरचना है।

भारत के विभिन्न प्रांतों में नववर्ष – भारत में नववर्ष एक ही भावना से, पर विभिन्न नामों और रूपों में मनाया जाता है। कहीं गुड़ी पड़वा, कहीं उगादि, कहीं विषु, कहीं पुथांडु, कहीं पोइला बैशाख और कहीं बैसाखी। यह विविधता दर्शाती है कि भारत की जलवायु और कृषि–चक्र हर क्षेत्र में समान नहीं है। जहाँ फसल की कटाई अलग समय होती है, वहाँ नववर्ष का उत्सव भी उसी के अनुरूप विकसित हुआ। यह भिन्नता भारतीय सँस्कृति की वैज्ञानिक लचीलापन और स्थानीय अनुकूलन क्षमता को सिद्ध करती है। पाश्चात्य नववर्ष और भारतीय नववर्ष का अंतर–पाश्चात्य कैलेंडर में वर्ष का आरम्भ 1 जनवरी से होता है, जो न तो किसी ऋतु परिवर्तन से जुड़ा है और न ही किसी कृषि चक्र से। वह तिथि ऐतिहासिक प्रशासनिक कारणों से निर्धारित हुई। इसके विपरीत भारतीय नववर्ष प्रकृति के चक्र से जुड़ा है। यह अंतर दर्शाता है कि भारतीय कालगणना जीवनोन्मुख है, जबकि पाश्चात्य प्रणाली तिथि–केंद्रित।

नववर्ष केवल उत्सव नहीं, जीवन–दर्शन – हिंदू नववर्ष केवल मंगलकामना का पर्व नहीं बल्कि जीवन–दर्शन है। यह हमें सिखाता है कि समय का आरम्भ वहीं से हो जहाँ जीवन में नवीनता आए। यह मनुष्य को प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर जीने की प्रेरणा देता है। आधुनिक विज्ञान भी अब यह मानने लगा है कि मानव सभ्यता को प्रकृति के अनुकूल जीवनशैली अपनानी होगी अन्यथा असंतुलन बढ़ेगा। इस प्रकार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ होने वाला हिंदू नववर्ष न तो मात्र धार्मिक अनुष्ठान है और न ही केवल साँस्कृतिक उत्सव। यह एक सुविचारित वैज्ञानिक व्यवस्था है, जो सूर्य, चंद्रमा, ऋतु परिवर्तन, कृषि–चक्र और मानव स्वास्थ्य–सभी को एक सूत्र में बाँधती है। इसमें आकाशीय गणना, जैविक संतुलन और सामाजिक परंपरा का अद्‌भुत समन्वय दिखाई देता है। अतः यह कहना उचित होगा कि हिंदू नववर्ष भारतीय वैज्ञानिक दृष्टि का साँस्कृतिक रूप है। यह हमें यह सिखाता है कि समय केवल घड़ी की सुई नहीं बल्कि प्रकृति की धड़कन है। नव संवत्सर हमें नवीन संकल्प, संतुलित जीवन और प्रकृति–सम्मत आचरण का संदेश देता है। वर्तमान पंचांग के अनुसार विक्रम संवत 2083 का आरम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 19 मार्च 2026 से हो रहा है। यह अवसर हमें अपनी कालगणना की वैज्ञानिकता को समझने और उस पर गर्व करने की प्रेरणा देता है।

समस्त पाठकों को हिंदू नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ।

murari.shukla@gmail.com

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा

कालचक्र का पावन द्वार है नवसंवत्सर'

मुदित मित्तल

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा अर्थात् चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की पहली तिथि, बढ़ते हुए चन्द्र के साथ नए वर्ष का आगमन। 1 अरब 95 करोड़ 58 लाख 85 हजार 127 वर्ष पहले चैत्र मास के शुक्लपक्ष में सूर्योदय के समय ब्रह्माजी ने जगत की रचना की थी। आरम्भ है सृष्टि का यह पावन प्रतिपदा। महाराज इक्ष्वाकु का राज्यारोहण है यह प्रतिपदा। सतयुग व प्रभव आदि 60 संवत्सरों का आरम्भ है चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा। चन्द्रमा और सूर्य के वर्ष का आरम्भ है मधुमास की धवल प्रतिपदा। इस चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सूर्योदय में जो वार होता है उसी का अधीश वर्ष का राजा होता है।

लंका नगरी में मधुमास (चैत्र) के सितपक्ष के आरम्भ होने पर सूर्योदय के समय जब रविवार था तब दिन, मास, पर्व, युगादि व युगपत आदि की प्रवृत्ति हुई थी। सम्राट विक्रमादित्य का शासनग्रहण दिवस है चैत्र शुक्ल प्रतिपदा। 180 देशों के अधीश्वर शकारि सम्राट विक्रमादित्य जिन्होंने रोमराज जूलियस सीजर को हराया ने जब चैत्र का शुक्ल पक्ष था, प्रतिपदा तिथि और सूर्य चन्द्रमा प्रथम अश्विनी नक्षत्र में थे तब विक्रम संवत् चलाया। नश्वर पत्थरों में गढ़े शिलालेख इतिहास की नदी की रगड़ खाकर सपाट हो जाते हैं पर इतिहास का सत्य सनातन समाज की शिराओं में उत्कीर्ण रह जाता है।

हिन्दू धर्म के सभी प्राचीन ग्रन्थों में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से वर्ष का आरम्भ माना गया है। विक्रम संवत् से दो अरब वर्ष पहले से ही यह प्रथा रही है, जिसे सम्राट विक्रमादित्य द्वारा चलाए संवत् में भी यथावत अपनाया गया। सूर्य जब 12 राशियों में पहली मेष राशि में प्रवेश करता है, उससे निकटतम वह पूर्णिमा जिसमें चन्द्रमा चित्रा नक्षत्र में या उसके पास में हो, वह चैत्र मास का अन्त होता है। इस चैत्र मास का कृष्णपक्ष पिछले वर्ष में और शुक्लपक्ष वर्तमान वर्ष में माना जाता है। ब्रह्माण्ड पुराण में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नवीन संवत्सर की पूजा करने का विधान दिया गया है। हेमाद्रि, निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु आदि सभी निबंध ग्रन्थों में इस प्रतिपदा का यशोगान है।

इसलिए पूरे देश के सभी विद्वानों, ज्योतिषाचार्यों व जन–जन द्वारा हजारों वर्ष से चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नव वर्ष मनाया जाता है, संवत्सर पूजन, पंचांग पूजन, ब्रह्माजी का पूजन किया जाता है और नए वर्ष के राजा, मंत्री आदि का भविष्यफल सुना जाता है। इस पावन दिन की शोभा वसन्त की नवरात्रि उसी तरह बढ़ा देती है, जैसे इन्द्र के बगीचे की शोभा कल्पवृक्ष बढ़ा देता है। सभी तरफ सात्विक भावनाओं का संचार हो जाता है, हवाओं में वसन्त के मोगरे की गन्ध और घरों में देवी के धूप की गन्ध समा जाती है।

'क्या है गत सम्वत् का चैत्र कृष्णपक्ष ?'

हर नवीनता व प्राचीनता के मध्य एक सन्ध्या होती है। वही सन्ध्या काल है चैत्र कृष्णपक्ष। अतीत से अनागत का द्वार है चैत्र कृष्ण पक्ष। सम्वत्सर का विश्राम स्थल है चैत्र कृष्णपक्ष। दग्ध हुए संवत्सर का धूम है चैत्र कृष्णपक्ष। सम्वत्सर होलिका के साथ दहन हो जाता है, अतः होलिका माता से प्रार्थना की जाती है कि इस सम्वत्सर में जो जो पाप हमसे हो गए हैं, उन्हें भी भस्म कर दीजिए। दग्ध हुआ सम्वत्सर ही सम्वत्सर यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् बचे हुए घृत सामग्री के अंशों से समिधा से बने कोयले पर जलता हुआ शेष रह जाता है चैत्र कृष्णपक्ष के रूप में।

सम्वत्सर यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद एकान्त में दहकता कुण्ड है चैत्र कृष्णपक्ष। इस सम्वत्सर अग्नि का सोमभाग वैसे ही चुकता है जैसे हर घटती कला के साथ कृष्णपक्ष का चन्द्रमा चुकता है। अनुभव में भी आता है इस समय में एक विचित्र प्रकार की नीरसता नैराश्य संक्रमण का काल रहता है, इस पक्ष में मनुष्य आदि सभी नवीन विचार उत्साह से हीन से रहते हैं आलस्य का प्रकोप रहता है। क्या इस अवकाश को होली के रंगों से भरा गया? बन्द हुए बहीखाते अलमारी में जाने का तो नए बहीखाते मेज पर आने का इंतजार करते हैं। पर जैसे ही चैत्र शुक्लपक्ष नव संवत्सर आता है और सम्वत्सर की अग्नि प्रज्जवलित होती है, पुनः नवजीवन नवउत्सव नव आशा का संचार होकर संसार उद्यमी हो जाता है। तब शुक्लपक्ष में संसार वैसे ही गतिमान होता जाता है जैसे चन्द्रमा कला पर कला चढ़ता जाता है। वर्ष आरम्भ होते ही कृष्णपक्ष का घटाव हिन्दू मनीषा को अभीष्ट नहीं है। जैसे ही चैत्र की अमावस्या का अंतिम विपल चुकता है चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से वर्ष कुण्डली का निर्माण हो जाता है और अगले सम्वत्सर का फल नियत हो जाता है। यह प्रतिपदा जब सूर्योदय में होती है, वही वार वर्ष का राजा बनता है। सूर्य संक्रान्तियों के वार ग्रह उस राजा के मन्त्रिमण्डल में कार्य करते हैं।

और सूक्ष्मता से देखें तो ज्योतिष नक्षत्र गणना के अनुसार चन्द्र वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही आरम्भ होता है क्योंकि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही चन्द्रमा पहले नक्षत्र अश्विनी या उसके पास में व पहली राशि मेष में प्रवेश करता है। फाल्गुन पूर्णिमा को चन्द्र पूर्वा या उत्तरा फाल्गुनी में रहता है व चैत्र कृष्ण प्रतिपदा को हस्त के आसपास जो 27 नक्षत्रों के एकदम मध्य में आता है इसलिए इस दिन किसी भी प्रकार वर्ष आरम्भ सिद्ध नहीं हो सकता है। न ही भारत में कोई भी सँस्कृति तब से वर्षारम्भ मानती है। भारत में सभी जगह किसी न किसी रूप में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का ही महत्त्व है।

दूसरा कारण यह कि हर तीन साल में चन्द्र व सूर्य दोनों लगभग एक साथ पहले नक्षत्र अश्वनी व पहली राशि मेष में प्रवेश करते हैं, क्योंकि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा व मेष संक्रान्ति लगभग एक साथ आती है, चैत्र कृष्णपक्ष में ऐसा कभी भी सम्भव नहीं हो सकता, क्योंकि चन्द्र वर्ष का मान सौर वर्ष से छोटा है, इसलिए वह हमेशा मेष संक्रान्ति से पहले पड़ेगी।

हर तीन साल में चन्द्र सूर्य की यह एकरूपता हिन्दू कालगणना में चन्द्रवर्ष व सौरवर्ष के अद्भुत समन्वय को दर्शाती है। चन्द्र और सूर्य ही पंचांग का निर्धारण करते हैं, तिथि, नक्षत्र, वार, योग, करण यह पाँचों चंद्र व सूर्य पर ही आधारित हैं, अतः इनके वर्षों की एकरूपता भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के नववर्ष से ही सिद्ध होती है। यदि चैत्र कृष्णपक्ष की प्रतिपदा को नववर्ष कहा जाएगा, तो महाराष्ट्र व गुजरात में एक महीने बाद नववर्ष आएगा, क्योंकि वहाँ अमान्त मास के कारण चैत्र कृष्ण प्रतिपदा के दिन फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा रहेगी। जबकि सभी जानते हैं चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सम्पूर्ण भारतवर्ष में एक ही होती है व उसी दिन अमान्त पूर्णिमांत दोनों ही प्रदेशों में साथ नववर्ष महोत्सव होता है।

हमारा पंचांग ज्योतिष पर आधारित है, नववर्ष भी ज्योतिष पर आधारित है, इतिहास पर नववर्ष आधारित नहीं है। जब इतिहास नहीं बना था तब भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा ही नववर्ष थी, इसी दिन से इतिहास चला है।

हमारे नववर्ष का महत्त्व व व्यापकता जानकर इतिहास में महापुरुषों ने इस दिन का उपयोग भी महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए किया, न कि उनके कार्यों के आधार पर हमारा नववर्ष निश्चित हुआ। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना की थी, सतयुग का आरम्भ हुआ था, न कि सम्राट विक्रमादित्य ने शकों को हराया इसलिए हमने उस तिथि को अपना नववर्ष माना। सम्राट धर्म के पीछे चले हैं, किसी सम्राट ने हमारे धर्म को नहीं चलाया। अतः चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा हिन्दू धर्म का महान उत्सव है, भगवती के आगमन का अवसर है, भगवान् श्रीरामचन्द्र जी के जन्मदिन के आगमन का सन्देश है, प्रकृति की मुस्कान है, हिन्दू का अभिमान है। सूर्य और चन्द्र रूप अश्विनीकुमारों का एकत्व है। सृष्टि रचयिता प्रजापति ब्रह्मा का महत्त्व है। अँग्रेजी अवैज्ञानिकता के दम्भ को ठोकर मारता विज्ञान है। प्रकृति के हर तत्त्व का सम्मान है। पूर्वजों की धरोहर, सनातन का गुलमोहर है। पर्वों का सरोवर, जगती का नव कलेवर है। है नदी की कल कल सा प्रतिवर्ष रुकता घाट पर। लाता नया सन्देश है गत संवत्सर समाप्त कर। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत्सर गतिप्रदा। नवीन वर्ष सर्वदा सर्वजन सुखप्रदा।

हिन्दू राष्ट्र में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा नववर्ष की तिथि है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नववर्ष अवश्य मनाएँ।

केरल में विशाल महामाघ महोत्सव

विजय कुमार, (ऋषिकेश)

भारत उत्सव प्रधान देश है। हर दिन कहीं न कहीं मेला, पर्व आदि होते ही हैं। ऐसा ही एक पर्व 'महामाघ महोत्सव' केरल के तिरुनावाया में भरतपुझा नदी के तट पर 19 जनवरी, 2026 (माघ प्रतिपदा) को प्रारंभ हुआ। इसका उद्घाटन राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने धर्मध्वजा फहरा कर किया। इसकी भव्यता एवं प्रभाव देखकर इसे 'केरल का कुंभ' कहा जा रहा है। कहते हैं कि सृष्टि के कल्याण हेतु पहला महान यज्ञ भगवान परशुराम के नेतृत्व और ब्रह्मा जी के संचालन में भरतपुझा के तट पर तपसुनूर (वर्तमान थवुनूर) में हुआ था। सभी देवता भी यहाँ आये थे। तब घोषणा हुई कि माघ मास में भारत की सात पवित्र नदियों की दिव्य ऊर्जा इस नदी में प्रवाहित होगी। अतः लोग इसे 'दक्षिण की गंगा' कहने लगे। तब से माघ मास में यहाँ स्नान पर्व होने लगा। हर 12 वर्ष बाद होने वाला भव्य पर्व 'महामाघ पर्व' कहलाया।

क्रमशः यह पर्व धार्मिक सीमाएँ पार कर दक्षिण भारत का विराट बौद्धिक, साँस्कृतिक और राजनीतिक संगम बन गया। केरल के पेरुमल राजा इसके अध्यक्ष होते थे। हर 12वें साल 'महामाघ पर्व' में केरल के सब राजा यहाँ आकर अपने शासन का लेखा जोखा प्रस्तुत करते थे। नये शासक का चयन होता था। ज्ञान, विज्ञान, दर्शन, ज्योतिष, कला आदि पर गहन विमर्श होते थे। पर धीरे–धीरे यह पर्व राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का अखाड़ा बन गया। कोच्चि, वल्लवनाडु और कालीकट के शासकों में वर्चस्व की खूनी लड़ाई होने लगी। अंतिम पेरुमल शासक चेरामन के बाद इसे किसी ने संरक्षण नहीं दिया। अँग्रेज शासक तो हिन्दू जागरण के इन आयोजनों से चिढ़ते ही थे। अतः 250 साल पूर्व यह महान परंपरा समाप्त हो गयी।

पर इतिहास भी करवट बदलता है। अंततः भरतपुझा का मौन टूटा और संत स्वामी आनंदवनम भारती ने इसके पुनर्जीवन का बीड़ा उठाया। उन्होंने सघन प्रवास कर दक्षिण के संतों और मठों को यहाँ आने का निमंत्रण दिया। इसका सुपरिणाम हुआ और न केवल दक्षिण, बल्कि उत्तर भारत के कई वरिष्ठ संत, महामंडलेश्वर, नागा संन्यासी तथा अखाड़े भी यहाँ पहुँचे। 19 जनवरी के बाद अगले 17 दिन तक भरतपुझा के तट पर आस्था, ज्ञान और सँस्कृति की त्रिवेणी बहती रही। लाखों लोगों ने इसमें पुण्य स्नान किया। इस दौरान हर दिन प्रायः 50 हजार श्रद्धालु यहाँ आये। अंतिम दिनों में तो यह सँख्या एक लाख तक पहुँच गयी। प्रतिदिन सूर्यास्त के समय होने वाली 'नीला आरती' धार्मिक आस्था का केन्द्र बन गयी। इसका संचालन काशी से आये विद्वान करते थे। अखंड दीपमालिका, मंत्रों की सुमधुर गूंज और भरतपुझा की शांत धारा उत्तर और दक्षिण के आध्यात्मिक मिलन की साक्षी बनी। यह आयोजन भरतपुझा के तट पर स्थित तीन प्राचीन मंदिरों के पास हुआ। ये हैं तवन्नूर ब्रह्मा मंदिर, नव मुकुंद विष्णु मंदिर तथा शिव मंदिर। इस प्रकार सृष्टि के निर्माता, पालक तथा संहारक तीनों इस पर्व के संरक्षक रहे। महोत्सव के मंच पर प्राचीन छाया कठपुतली कला (थोलपावाकूथू), केरल का पारंपरिक आध्यात्मिक नृत्य (तिरुवातिरा) तथा प्राचीन मार्शल आर्ट (कलारीपयट्टु) के साथ ही वैदिक यज्ञ और मंत्रोचारण का भव्य प्रदर्शन हुआ।

271 वर्ष बाद सम्पन्न हुआ यह 'महामाघ पर्व' एक क्षेत्रीय आयोजन होने के बावजूद पूरे भारत की आध्यात्मिक चेतना का जीवंत संगम बन गया। केरल के अलावा तमिलनाडु, कर्नाटक, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश के हजारों श्रद्धालुओं ने यहाँ आकर पवित्र स्नान किया। कई तीर्थयात्री तो हजारों कि.मी. पैदल चलकर यहाँ आये। अब स्वामी आनंदवनम भारती ने 2028 में प्रयागराज महाकुंभ की तरह इसे और अधिक भव्यता से मनाने की घोषणा की है।

vj.kumar.1956@gmail.com

डॉ. प्रवेश कुमार

हिन्दू भारत का शरीर है तो हिन्दुत्व इसका प्राण है

एक धर्म है जो आज के प्रचलित रिलिजनों में शामिल नहीं है, इसलिए हिन्दू सर्वसमावेशी है। हमें अपने हिन्दू होने पर गौरव हो और साँस्कृतिक और सनातन मूल्यों के आधार पर कम से कम अपने जीवन भाषा, भूषा, भोजन, भवन और भ्रमण इनमें हम हिन्दू मूल्य तत्वों को सम्मिलित करें। हिन्दू रूपी शरीर का नाम भारत है तो हिन्दुत्व इसका प्राण है, सँस्कृति सबकी एक चिरंतन खून रगों में हिदू है। विराट सागर समाज अपना हम सब इसके बिदु हैं। भारत हिन्दू जीवन दर्शन, मूल्य, मान्यताओं पर संचालित होने वाला राष्ट्र है। सर्वाधिक हिन्दू मान्यताओं को मानने वाला समाज यहीं रहता है। ये हिन्दू ही तो भारत की पहचान हैं, इस हिन्दू सँस्कृति के प्रभाव के कारण ही वर्षों की विदेशी दासता में भी हिन्दू समाज का अपने मठ मन्दिरों के प्रति श्रद्धा बनी रही।

भारत वैसे तो साँस्कृतिक रूप से कभी भी किसी के अधीन नहीं हुआ, हाँ प्रशासनिक अधीनता जरूर भारत में रही। कभी यह इस्लामिक शासकों द्वारा नियंत्रित थी, तो कभी ईसाईयत के मानने वाले अँग्रेजों के द्वारा। लगभग एक हजार वर्षों के अधीनता काल में भी भारत की हिन्दू शक्ति ने हमें इन दोनों मजहबी मान्यताओं के मानने वाले शासकों के विरुद्ध मजबूती से खड़े होकर संघर्ष करने का संबल दिया। आप एक बार विचार करके देखें कि एक मजहब के मानने वालों ने जहाँ भी सत्ता को प्राप्त किया, वहाँ के समाज को कुछ ही वर्षों में उन्होंने अपने ही रंग में रंग दिया, लेकिन हिन्दुस्थान में वह ऐसा करने में सफल नहीं हो पाये। हम जब इस प्रश्न को सुलझाने का प्रयास करते हैं, तो, हमें ज्ञात होता है कि हमारी हिन्दू शक्ति ही हमारी अभिप्रेरणा बनी।

जिसने वर्षों हमें किसी मजहबी दायरे में प्रवेश होने के मानस से बचाये रखा। हम सोचें जिजया जैसा ''कर'' जो हिंदू समाज की धार्मिक यात्राओं पर मुस्लिम शासकों द्वारा लगाया गया। इस सबके बावजूद ''कर'' देकर भी हिंदू समाज ने अपनी धार्मिक यात्राएँ और कुंभ जैसे आयोजन को चालू रखा। हमारे तीस हजार से ज्यादा मंदिरों को इस्लामिक आक्रांताओं के द्वारा तोड़ा गया, लेकिन हिन्दू शक्ति में थोड़ा भी सामर्थ्य आया, तो, उसने अपने देव स्थानों को पुनः खड़ा किया। 1528 में मुगल आक्रांता बाबर द्वारा हमारे रामलला के जन्मभूमि मंदिर को तोड़ा गया। इसी जन्मभूमि स्थान पर मस्जिदनुमा ढाँचा खड़ा करने का प्रयास हुआ।

बाबर तो कहीं और भी मस्जिद बना सकता था। लेकिन उसने इस्लामिक गौरव का प्रदर्शन और हिन्दुओं में हीनता के भाव को जागृत करने हेतु अयोध्या जी में श्री रामजन्मभूमि स्थान पर ही मस्जिदनुमा ढाँचा खड़ा किया। लेकिन हम हिंदू सोचें कि श्रीरामजन्मभूमि मंदिर के विध्वंस से ही हिन्दू समाज ने संकल्प लिया कि ''रामलला हम आयेंगे–मंदिर वहीं बनाएंगे' आज लाखों बलिदान के परिणामस्वरूप भगवान राम का जन्मभूमि मंदिर बन चुका है। यह हमारी हिन्दू शक्ति ही थी, जिस कारण हम कई पीढ़ियों के संघर्ष के बाद भी एक मंदिर, जन्मभूमि मंदिर के लिए संघर्ष करते रहे। वर्ष 1951 में सोमनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार ने भारत की छवि को दुनियाँ में बढ़ाने का काम किया। एक तरफ विकास के पैमानों पर भारत काम कर रहा था। वहीं अपनी विरासत को भी संजोने का काम भारत का जनमानस कर रहा था। लेकिन ऐसे में पंडित नेहरू का सेक्युलर छवि बनाने के चक्कर में सोमनाथ जी मंदिर के जीर्णोद्धार कार्यक्रम में देश के राष्ट्रपति ना शामिल हों, इसके प्रयास यह भी एक यथार्थ था। जिस हिन्दुत्व शक्ति ने हमें हमेशा गौरव, आत्मस्वाभिमान हमारे ''स्व'' के साथ संबद्ध रखा। भारत यानि की हिन्दुओं को ये समझने की आवश्यकता है कि भारत

रूपी शरीर का नाम हिन्दू है, वहीं हिन्दू शरीर की आत्मा हिन्दुत्व है। महर्षि अरविन्द ने हिन्दू को भारत की राष्ट्रीयता माना वहीं स्वतंत्रता सेनानी डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी ने हिन्दू को भारत की राष्ट्र अस्मिता मानते हैं। स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा कि ''हिन्दुओं में अपने को कमजोर समझने की वृत्ति ही उनकी सबसे बड़ी समस्या है''। इसलिए हम हमारे देश के सनातन मूल्य–मान्यताओं हमारी सम्यक दृष्टि को जानें और समझें।

हमारा हिन्दू तत्व हमारे भीतर हमारे गौरव को राम–कृष्ण, राणा और शिवा जी, झलकारी बाई, अवंती बाई लोधी, महावीरी देवी, वाल्मीकि, रानी झाँसी आदि से जोड़ती है। यही हिन्दुत्व हमें उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम संपूर्ण भारत को परस्पर जोड़ता है। इसी हिन्दू शक्ति ने इस्लामिक कालखंड में भक्ति आन्दोलन के द्वारा सॉफ्ट इस्लाम जिसे सूफी कहा जाता है, उसके प्रति हिन्दू में होते आकर्षण को काफी हद तक शिथिल करने का प्रयास किया। हम सोच कर देखें कि संत गुरु रविदास जी जिस बात को काशी में कह रहे थे, यही समान बात उत्तर–पूर्व में शंकर देव कर रहे थे। इसी को गुरु नानक देव कह रहे थे तो यही बातें चोखेमेला, तिरवल्लऊवर दक्षिण में वही गुरु घासीदास आदि कर रहे थे। यही एकत्व भाव जिसका नाम हिन्दुत्व है, इस हिन्दू शक्ति ने भारत के प्रत्येक व्यक्ति को आपस में जोड़ा रखा है। यही हिन्दू तत्व भारत और भारत की सनातन सँस्कृति को सबसे भिन्न करती हैं। भारत का विशाल हिंदुत्व चिंतन धारा ही है, जो इस प्रकार के किसी भी भेद को नकार देता है।

हम किसी से शत्रु भाव ना रखते हुए, सबको परस्पर अपना आचरण करते हुए, अंतिम सत्य तक पहुँचने की बात करते हैं। इसीलिए हिंदू सँस्कृति जो भारत की सँस्कृति है, इसने अपने को इस्लाम से भी अलग नहीं किया, कोई पूजा कैसी भी कर सकता है, लेकिन उसमें और मुझमें एक ही तत्व है, हम एक ही हैं। यही एकत्व का भाव ही तो अपना भाव है, इसलिए हमने और हमारे विचार ने किसी को अपना शत्रु नहीं माना, इसीलिए हमने किसी को भी प्रताड़ित करने का काम नहीं किया। दुनियाँ के देशों में जहाँ भी इस्लाम, ईसाईयत् गई कुछ ही वर्षों में उन राष्ट्रों को अपने पंथ में पूरी तरह मत्तांतरण कर दिया। लेकिन भारत ही ऐसी भूमि थी, जहाँ लोगों ने वर्षों अत्याचार सहना स्वीकार किया, लेकिन अपना हिन्दू तत्व नहीं त्यागा।

इसलिए हम कहते हैं कि हिन्दू कोई पंथ से पूजा से जुड़ी चीज नहीं है ये एक धर्म है, अब आता है ये धर्म, पंथ से वैसे भिन्न हो जाता है? पंथ केवल एक पूजा पद्धति से जुड़ी हुई है, जिसका व्यक्ति के जीवन में अनुष्ठानिक कार्यों के परिपालन से जुड़ा है या यूं कहें कि ये इसका प्रमुख भाग है। वहीं धर्म अपने स्वरूप में अधिक विशाल है, धर्म वर्तमान के अब्राहिक रिलिजनों से भिन्न है। ये रिलिजन कभी धर्म नहीं हो सकता। रिलिजन को बताते हुए स्वामी विवेकानंद कहते हैं ''किसी रिलिजन के लिए तीन चीजें होनी बेहद जरूरी है, एक किताब, एक पैगम्बर, एक पूजा पद्धति ये तीन आधार आपको किसी भी पंथ या रिलिजन में मिलेंगे, लेकिन वहीं भारत में देखें, तो, यहाँ के हिन्दू धर्म में क्या कोई एक पूजा की पद्धति है ? क्या कोई एक ही पवित्र पुस्तक है ? जिसे सारे हिन्दू मान लें, क्या कोई एक ही भगवान है ? तो ये तीनों ही प्रश्न हिन्दू धर्म के सामने बे–उतर हो जाते हैं। परंतु ये सब आपको इस्लाम एवं ईसाई अन्य पंथों में मिलेगा, परंतु क्या हिन्दू धर्म में ऐसा है, तो उत्तर आता है नहीं ! इसलिए हिन्दू एक विचार है, दर्शन है और जीवन कैसे चलना चाहिए, इसका दिशा–निर्देश देने वाला तत्व है। ये एक धर्म है जो आज के प्रचलित रिलिजनों में शामिल नहीं है, इसलिए हिन्दू सर्वसमावेशी है। हमें अपने हिन्दू होने पर गौरव हो और साँस्कृतिक और सनातन मूल्यों के आधार पर कम से कम अपने जीवन भाषा, भूषा, भोजन, भवन और भ्रमण इनमें हम हिन्दू मूल्य तत्वों को सम्मिलित करें।

(लेखक सहायक प्रोफेसर, तुलनात्मक राजनीति और राजनीतिक सिद्धांत का केन्द्र, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली।)

(वीर अर्जुन से साभार)

क्या ग्रेट निकोबार बनेगा भारत का सिंगापुर या टूटेगा पर्यावरणीय संतुलन?

अजय कुमार

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का सबसे दक्षिणी द्वीप ग्रेट निकोबार आज भारत की रणनीतिक, आर्थिक और पर्यावरणीय बहस का केंद्र बन चुका है। करीब 90 हजार करोड़ रुपये की अनुमानित लागत वाली मेगा इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजना को नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल से मंजूरी मिलने के बाद यह सवाल और गहरा हो गया है कि क्या भारत विकास और संरक्षण के बीच संतुलन साध पाएगा ? ट्रिब्यूनल ने अपने आदेश में कहा है कि परियोजना को दी गई पर्यावरणीय स्वीकृति में पर्याप्त सुरक्षा उपाय शामिल हैं और इसे रोका नहीं जा सकता, लेकिन यह भी स्पष्ट किया कि हर शर्त का कड़ाई से पालन अनिवार्य होगा। ग्रेट निकोबार द्वीप भारत का सबसे दक्षिणी बड़ा द्वीप है और भौगोलिक दृष्टि से इसकी स्थिति असाधारण मानी जाती है। यह द्वीप मलक्का जलडमरू मध्य से करीब 35 से 40 नॉटिकल मील की दूरी पर स्थित है। अंतरराष्ट्रीय समुद्री संगठनों और शिपिंग डेटा के मुताबिक दुनियाँ के कुल समुद्री व्यापार का लगभग 30 से 40 प्रतिशत हिस्सा इसी जलडमरू मध्य से होकर गुजरता है। चीन के कुल ऊर्जा आयात का करीब 60 प्रतिशत और जापान तथा दक्षिण कोरिया के व्यापार का बड़ा हिस्सा इसी रास्ते पर निर्भर है। यही वजह है कि इसे हिंद महासागर क्षेत्र की सबसे अहम 'चोक पॉइंट' माना जाता है।

भारत के लिए यह स्थिति इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि अभी तक देश के पास इस इलाके में कोई बड़ा ट्रांसशिपमेंट हब नहीं है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार भारत का करीब 75 प्रतिशत कंटेनर ट्रांसशिपमेंट विदेशी बंदरगाहों जैसे सिंगापुर, कोलंबो और पोर्ट क्लांग के जरिए होता है। इससे न केवल समय बढ़ता है बल्कि लॉजिस्टिक्स लागत भी 10 से 15 प्रतिशत तक ज्यादा हो जाती है। रिजर्व बैंक और शिपिंग मंत्रालय से जुड़े अध्ययनों में यह बात सामने आई है कि उच्च लॉजिस्टिक लागत के कारण भारत की मैन्युफैक्चरिंग और एक्सपोर्ट प्रतिस्पर्धा प्रभावित होती है। इसी कमी को दूर करने के लिए ग्रेट निकोबार मेगा प्रोजेक्ट को गेमचेंजर बताया जा रहा है।

यह परियोजना लगभग 166 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली होगी। इसमें गैलेथिया बे पर अंतरराष्ट्रीय कंटेनर ट्रांस शिपमेंट टर्मिनल, ड्यूल यूज सिविल–मिलिट्री एयरपोर्ट, 450 मेगावॉट का गैस और सौर ऊर्जा आधारित पावर प्लांट और एक नई इंटीग्रेटेड टाउनशिप शामिल है। सरकारी दस्तावेज बताते हैं कि सिर्फ पोर्ट परियोजना पर करीब 40,040 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है। पहले चरण में 18,000 करोड़ रुपये की लागत से 2028 तक इसे चालू करने का लक्ष्य है। शुरुआती क्षमता 4 मिलियन टीईयू से अधिक होगी, जबकि पूरी तरह विकसित होने पर यह क्षमता 16 मिलियन टीईयू तक पहुँच सकती है।

अगर इन आँकड़ों की तुलना की जाए तो भारत का कुल कंटेनर ट्रैफिक 2020 में करीब 17 मिलियन टीईयू था, जबकि चीन का आँकड़ा 245 मिलियन टीईयू से अधिक रहा। यह अंतर साफ दिखाता है कि भारत को अपने समुद्री इंफ्रास्ट्रक्चर में कितनी बड़ी छलांग की जरूरत है। विशेषज्ञों का मानना है कि अगर बड़े कंटेनर जहाज सीधे ग्रेट निकोबार पर रुकने लगते हैं, तो छोटे फीडर जहाजों के जरिए देश के पूर्वी और पश्चिमी तट के बंदरगाहों तक माल पहुँचाना आसान होगा। इससे ट्रांजिट टाइम में कई दिनों की बचत हो सकती है और लागत में भी उल्लेखनीय कमी आएगी। रणनीतिक दृष्टि से यह परियोजना भारत की समुद्री सुरक्षा को नई मजबूती दे सकती है। रक्षा विश्लेषकों के अनुसार ग्रेट निकोबार का विकास हिंद महासागर क्षेत्र में निगरानी, खुफिया गतिविधियों और त्वरित सैन्य प्रतिक्रिया की क्षमता को बढ़ाएगा। आपदा प्रबंधन और मानवीय सहायता अभियानों के लिहाज से भी यह द्वीप एक अहम बेस बन सकता है। इंडो– पैसिफिक क्षेत्र में बढ़ती सामरिक हलचलों के बीच भारत के लिए यह एक अतिरिक्त बढ़त के रूप में देखा जा रहा है।

लेकिन जितनी बड़ी इसकी रणनीतिक और आर्थिक अहमियत है, उतनी ही गहरी इसकी पर्यावरणीय चुनौतियाँ भी हैं। ग्रेट निकोबार एक बायोस्फीयर रिजर्व है, जहाँ घने वर्षावन, मैंग्रोव, कोरल रीफ और कई दुर्लभ प्रजातियाँ पाई जाती हैं। पर्यावरण आकलनों के अनुसार परियोजना के लिए 8.5 लाख से लेकर 50 लाख से ज्यादा पेड़ों की कटाई की आशंका जताई गई है। यह क्षेत्र लेदरबैक समुद्री कछुओं के सबसे महत्वपूर्ण प्रजनन स्थलों में से एक है। इसके अलावा निकोबार मेगापोड पक्षी, खारे पानी के मगरमच्छ, निकोबार मकाक और रॉबर क्रैब जैसी प्रजातियों पर भी खतरे की बात कही जा रही है, यही कारण है कि इस परियोजना को लेकर राजनीतिक और सामाजिक विरोध भी सामने आया। काँग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गाँधी समेत कई पर्यावरणविदों ने आरोप लगाया कि परियोजना में पर्यावरण और स्थानीय समुदायों के भविष्य को नजरअंदाज किया गया है। उनका कहना रहा कि क्लाइमेट चेंज के दौर में समुद्र जल स्तर बढ़ रहा है और ऐसे में इतने बड़े तटीय इंफ्रास्ट्रक्चर का जोखिम कई गुना बढ़ जाता है।

ग्रेट निकोबार सिर्फ जैव विविधता का केंद्र नहीं है, बल्कि शोंपेन और निकोबारी जैसी जनजातियों का भी घर है। खासतौर पर शोंपेन जनजाति की आबादी 200 से 300 के बीच बताई जाती है और उन्हें दुनियाँ की सबसे संवेदनशील आदिवासी जनजातियों में गिना जाता है। विशेषज्ञों का कहना है कि बड़े पैमाने पर बाहरी आबादी के आने से उनकी पारंपरिक जीवन शैली, सँस्कृति और अस्तित्व पर गंभीर असर पड़ सकता है। सरकार का दावा है कि आदिवासी अधिकारों की रक्षा के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं और उनके क्षेत्रों में न्यूनतम हस्तक्षेप होगा, लेकिन इस पर लगातार निगरानी की मांग की जा रही है। एनजीटी ने अपने आदेश में पर्यावरण संरक्षण को लेकर कई सख्त निर्देश दिए हैं। इनमें मैंग्रोव पुनर्स्थापन, कोरल ट्रांसलोकेशन, तटरेखा संरक्षण, वन्य जीवों के प्रजनन स्थलों की सुरक्षा और आदिवासी हितों की रक्षा शामिल है। ट्रिब्यूनल ने यह भी साफ किया है कि आईलैंड कोस्टल रेगुलेशन जोन नियमों का किसी भी स्तर पर उल्लंघन स्वीकार नहीं किया जाएगा और जरूरत पड़ने पर कार्रवाई की जाएगी। कुल मिलाकर ग्रेट निकोबार मेगा प्रोजेक्ट भारत के सामने एक बड़ी परीक्षा है। एक तरफ राष्ट्रीय सुरक्षा, समुद्री शक्ति और आर्थिक विकास की जरूरत है, तो, दूसरी तरफ पर्यावरण संतुलन और स्थानीय समुदायों की रक्षा की जिम्मेदारी। आने वाले वर्षों में यह परियोजना किस दिशा में आगे बढ़ती है, यही तय करेगा कि ग्रेट निकोबार भारत के लिए अगला सिंगापुर बनता है, या विकास और संरक्षण की टकराहट का सबसे बड़ा उदाहरण ? फिलहाल इतना तय है कि यह द्वीप अब सिर्फ भारत का सबसे दक्षिणी भू–भाग नहीं, बल्कि देश की समुद्री राजनीति और दीर्घकालिक रणनीति का केंद्र बन चुका है।

रिजर्व बैंक और शिपिंग मंत्रालय से जुड़े अध्ययनों में यह बात सामने आई है कि उच्च लॉजिस्टिक लागत के कारण भारत की मैन्युफैक्चरिंग और एक्सपोर्ट प्रतिस्पर्धा प्रभावित होती है। इसी कमी को दूर करने के लिए ग्रेट निकोबार मेगा प्रोजेक्ट को गेमचेंजर बताया जा रहा है। यह परियोजना लगभग 166 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली होगी। इसमें गैलेथिया बे पर अंतरराष्ट्रीय कंटेनर ट्रांस शिपमेंट टर्मिनल, ड्यूल यूज सिविल–मिलिट्री एयरपोर्ट, 450 मेगावॉट का गैस और सौर ऊर्जा आधारित पावर प्लांट और एक नई इंटीग्रेटेड टाउनशिप शामिल है।

सामाजिक समरसता अभियान की केन्द्रीय बैठक विजयवाड़ा में सम्पन्न

विजयावाड़ा (आ.प्र.)। विश्व हिन्दू परिषद–सामाजिक समरसता अभियान की केंद्रीय बैठक दिनाँक 21–22 फरवरी, 2026 को विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश) में संपन्न हुई। इस बैठक में देशभर के 35 प्रांतों से 132 प्रांतीय प्रतिनिधियों ने सहभागिता की।

उद्घाटन सत्र में पूज्य स्वामी श्री आचार्य भारत भूषण दास जी महाराज, स्वामी श्री संकर स्वामी जी तेलंगाना, केन्द्रीय सह संगठन महामंत्री व सामाजिक समरसता के पालक श्री विनायकराव देशपांडे, क्षेत्रीय मंत्री श्री रविकिशन जी, प्रबंध समिति व प्रन्यासी मण्डल के सदस्य श्री वाई. राघवुलू जी, प्रांत संगठन मंत्री श्री श्रीनिवासन जी, SLV ग्रीन मंडोर के मालिक भी

उपस्थित रहे। केन्द्रीय बैठक में विहिप केन्द्रीय मंत्री व अ.भा. सामाजिक समरसता प्रमुख श्री देवजीभाई रावत द्वारा लिखित पुस्तक ''राष्ट्र रक्षा कवच'' का विमोचन किया गया।

ब्रेन का एक फंक्शन है- मेधा

– मुरारी शरण शुक्ल

आईए जानते हैं कि अथर्ववेद इस सन्दर्भ में क्या कहता है? सातवलेकर जी के भाष्य को यथारूप किंचित आवश्यक टिप्पणियों के साथ रखने का प्रयत्न करता हूँ।

ये त्रिषप्ता परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।

(अथर्ववेद काण्ड 1, अध्याय 1 (मेधाजनन अध्याय), मंत्र 1)

1.सातवलेकर जी ने इस मंत्र का भाष्य करते हुए लिखा है कि पदार्थ दो प्रकार के होते हैं, एक रूपवाले और दूसरे रूपरहित। आत्मा परमात्मा रूपरहित हैं और सम्पूर्ण जगत् रूपवाले पदार्थों से भरा है। पदार्थों के विविध रूप जो मनुष्य, पशु, पक्षी, वृक्ष, वनस्पति, पाषाण आदि में दिखाई देते हैं– कौन धारण करता है, ये रूप कैसे बनते हैं? इस शंका के उत्तर में इस सूक्त के ऋषि अथर्वा कहते हैं कि जगत के मूल में जो सात पदार्थ– पृथ्वी, आप, तेज, वायु, आकाश, तन्मात्र और अहंकार है, ये ही सम्पूर्ण जगत में दिखाई देने वाले विविध रूप धारण करते हैं। ये सात पदार्थ तीन अवस्थाओं में से गुजरते हुए जगत् के रूप और आकार धारण करते हैं।

१.सत्त्व अर्थात् समावस्था,

२.रज अर्थात् गतिरोध अवस्था और

३.तम अर्थात् गतिहीन अवस्था, इन तीन अवस्थाओं में पूर्वोक्त सात पदार्थ गुजरने से कुल इक्कीस पदार्थ बनते हैं, जो सम्पूर्ण सृष्टि का रूप धारण करते हैं।

टिप्पणी– हमारे मानव शरीर का निर्माण भी इन्हीं सात और तीन तत्वों से हुआ है। शरीर के अंदर व्याप्त इन इक्कीस कांबिनेशन्स में से किसी में कोई विकृति या दूषण होता है, तो यह किसी न किसी व्याधि का कारण बनता है। और यहीं से मानसिक व्याधि का भी जन्म होता है। इनको प्रकृतिस्थ कर देने मात्र से रोग मुक्त हुआ जा सकता है। इस मंत्र के नित्य जप से भी रोग मुक्त हुआ जा सकता है। ध्यान दें कि यह मंत्र का आरम्भिक आधा भाग ही है।

यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे

2.सृष्टि के हर एक आकारधारी पदार्थ में बड़ी शक्ति है। हमारा शरीर भी सृष्टि के अंतर्गत होने से एक रूपवान पदार्थ है और इसमें तीन गुणा सात पदार्थ हैं, जैसा की पिछली पोस्ट में वर्णन किया गया था। उपरोक्त इक्कीस पदार्थों से बने होने के कारण, यह मानव शरीर भी बहुत शक्तिशाली है। इन इक्कीस तत्वों से शरीर बना है और इन्हीं इक्कीस तत्वों से यह संसार भी बना है और इसी कारण शरीर के अंदर के इन इक्कीस तत्वों का सम्बन्ध बाह्य जगत के पूर्वोक्त इक्कीस तत्वों के साथ है। शरीर का स्वास्थ्य या रोगीपन इस सम्बन्ध के ठीक होने और न होने पर अवलम्बित है।

शरीरान्तर्गत इन तत्वों को बाह्य जगत के तत्वों के साथ योग्य सम्बन्ध रखकर अपना आरोग्य स्थिर करके अपना बल अंदर से बढ़ाने की सूचना इस मंत्र द्वारा यहाँ मिलती है। जैसे बाह्य शुद्ध वायु से अपने प्राण का बल, बाह्य सूर्य प्रकाश से अपने नेत्र का बल, इसी प्रकार अन्यान्य बल बढ़ाकर अपनी शक्ति पराकाष्ठा तक बढ़ानी चाहिए। यह अथर्ववेद का मुख्य विषय है।

ये त्रिषप्ता परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।

(अथर्ववेद काण्ड 1, अध्याय 1 (मेधाजनन अध्याय), मंत्र 1)

टिप्पणी– इसीलिए कहा गया है कि जो आपके अंदर है, वही दुनियाँ में बाहर भी है। दृश्य शरीर जैसा है, वैसा ही, उन्हीं तत्वों और अवयवों से यह संसार भी बना हुआ है। जो अदृश्य आत्मा और चेतना आपके अंदर विद्यमान है, वही आत्मा और चेतना प्रकृति और परमात्मा के रूप में बाहर भी विद्यमान है। इसी को कहा है, यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे। यदि अंदर के अवयवों को ठीक कर लिया, तो, बाहर के पदार्थों पर आपकी पकड़, नियंत्रण, तालमेल बढ़ जाएगा। बाहर अर्थात् परिवेश, परिस्थिति, पर्यावरण, प्रकृति को ठीक कर लिया, तो उससे अंदर का नियंत्रण, पकड़, प्रभाव, शक्ति सब बढ़ जाता है। यही स्वस्थ रहने, दीर्घायु रहने और मुक्त होने का सूत्र है।

आदिवासियों के आरक्षण का अस्सी प्रतिशत हिस्सा हड़प रहे हैं ईसाई : मिलिंद परांडे

खूंटी (झारखण्ड)। खूंटी जिलान्तर्गत रनिया में विराट हिन्दू सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय संगठन महामंत्री मिलिंद परांडे ने कहा कि जिस आदिवासी ने अपनी परंपरा और पूजा पद्धति छोड़ दी, वे ईसाई ही जनजातियों के आरक्षण का 80 प्रतिशत हिस्सा हड़प रहे हैं और सही आदिवासियों का हक मार रहे हैं। परांडे शुक्रवार को सर्व सनातन समाज द्वारा आयोजित विराट हिंदू सम्मेलन को बतौर मुख्य वक्ता संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हिन्दू ही हिंदू की आबादी घटा रहा है, जबकि मुसलमानों और ईसाइयों की आबादी लगातार बढ़ रही है। परांडे ने कहा कि विश्व में 50 से अधिक इस्लामिक और 120 ईसाई देश हैं, जबकि भारत और नेपाल ही ऐसे देश हैं, जहाँ हिंदू बहुसँख्यक हैं। ऐसे में हिंदू समाज को अपने अस्तित्व, परंपराओं और पहचान को लेकर गंभीरता से विचार करना होगा।

मिलिंद परांडे ने कहा कि हिंदू समाज विश्व का सबसे प्राचीन समाज है, जो हजारों–लाखों वर्षों से अस्तित्व में रहा है। उन्होंने भगवान श्रीराम के वनवास, राम मंदिर आंदोलन और झारखंड के लगभग दो हजार गाँवों से सरनास्थलों की मिट्टी के राम मंदिर निर्माण में उपयोग का उल्लेख करते हुए कहा कि यह प्राचीन परंपराओं की जीवंत मिसाल है। उन्होंने आह्वान किया कि प्रत्येक हिंदू को अपनी सँस्कृति और परंपरा की रक्षा के लिए आगे आना चाहिए।

उन्होंने कहा कि संविधान में 'जनजातीय' शब्द और एसटी आरक्षण का प्रावधान जनजातीय समाज की परंपरा, पूजा–पद्धति और साँस्कृतिक पहचान की रक्षा के लिए किया गया था। आरोप लगाया गया कि 1947 के बाद आरक्षण का बड़ा हिस्सा ईसाई मिशनरियों से जुड़े लोगों ने लिया, जबकि परंपरागत आदिवासी इससे वंचित रह गए। इस संदर्भ में कार्तिक उरांव द्वारा ईसाई धर्म अपनाने वालों को आरक्षण से वंचित करने हेतु लाए गए विधेयक की चर्चा की गई, जिसे तत्कालीन सरकार ने स्वीकार नहीं किया। विहिप के केंद्रीय संगठन महामंत्री ने कहा कि आज बड़ा संकट यह है कि हिंदू समाज द्वारा दिए गए अधिकारों का दुरुपयोग कर हिंदू परंपराओं का अपमान किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जनजातीय समाज को अपनी परंपरा की रक्षा का अधिकार है और इस विषय पर गंभीर विचार विमर्श आवश्यक है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत प्रचारक गोपाल शर्मा ने कहा कि हिन्दू समाज केवल एक–दो वर्षों का नहीं, बल्कि हजारों वर्षों के आक्रमणों का शिकार रहा है। आस्था के केंद्र रहे मंदिरों को तोड़ा गया, जिससे समाज का आत्मबल कमजोर हुआ। इस दीर्घ आक्रमण काल में हिन्दू समाज का विघटन हुआ, जिसके लिए कहीं न कहीं समाज स्वयं भी जिम्मेदार रहा, क्योंकि हम अपनी व्यक्तिगत चिंताओं में उलझते चले गए। उन्होंने कहा कि जो हमारे संविधान, मातृभूमि, परम्परा के विरुद्ध बात करेगा उन्हें पहचानना चाहिए। उन्होंने कहा कि अपनी बहू–बेटियों और परम्परा की रक्षा का संकल्प लेना होगा। उन्होंने कहा कि बाहरी आक्रमणकारियों ने जातियों में विभाजन पैदा किया, जिससे देश गुलाम हुआ। यदि सभी जातियों के लोग मिलकर कार्य करें, तो देश को फिर से सशक्त बनाया जा सकता है। आज भी हिन्दू समाज को तोड़ने के प्रयास हो रहे हैं, लेकिन संगठन और एकता से हर चुनौती का सामना करना संभव है।

chitranjan1964@gmail.com

नई दिल्ली में अखिल भारतीय गोभक्त महिला सम्मेलन सम्पन्न

नई दिल्ली। विश्व हिंदू परिषद, गोरक्षा विभाग, 'भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद', के तत्वाधान में तीन दिवसीय अखिल भारतीय गोभक्त महिला सम्मेलन दिनांक 12 से 14 फरवरी 2026 तक तेरापंथ भवन, आध्यात्म साधना केन्द्र के पास, छतरपुर, नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ। देश के विभिन्न प्रांतों से लगभग 250 गोभक्त महिलाएँ, गोरक्षा विभाग के केन्द्रीय टोली के पदाधिकारियों व प्रान्त गोरक्षा प्रमुखों की उत्साहपूर्ण सहभागिता ने इस सम्मेलन को एक विराट राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया। सम्मेलन का उद्देश्य गो–संरक्षण, गो–संवर्धन तथा गो–आधारित सामाजिक–आर्थिक पुनर्जागरण में मातृशक्ति की भूमिका को सशक्त बनाना था।

उद्घाटन सत्र का शुभारंभ वैदिक मंत्रोच्चार एवं गौमाता पूजन के साथ प्रारम्भ हुआ। विश्व हिन्दू परिषद के सयुंक्त महामंत्री एवं गोरक्षा के पालक अधिकारी मा. स्थाणुमालयन जी ने संगठन विस्तार, कार्ययोजना निर्माण एवं आगामी लक्ष्यों पर चर्चा की। उन्होंने प्रत्येक जिले एवं प्रखंड स्तर पर महिला गोभक्त टोलियों के गठन का आह्वान किया। तत्पश्चात गोसम्पदा पत्रिका के प्रचार–प्रसार प्रमुख डॉ. नरेश शर्मा ने गोमाता की वैदिक, शास्त्रीय, साँस्कृतिक, कृषि, औषधीय एवं पर्यावरणीय महत्ता पर विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भारतीय सभ्यता की आत्मा गोसंस्कृति में निहित है तथा गो–आधारित जीवन पद्धति समग्र मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है।

दूसरे सत्र में अखिल भारतीय सह प्रमुख श्री केशव राजू जी ने अपने उद्बोधन में स्पष्ट कहा कि "गोरक्षा का कार्य तभी होगा, जब संगठन सशक्त होगा। यदि संगठन नहीं होगा, लोग संगठित नहीं होंगे तो गोरक्षा कैसे संभव होगी ?" उन्होंने संगठन के सुदृढ़ीकरण पर विशेष बल देते हुए प्रांत, राज्य, जिले तथा प्रखंड स्तर पर टोलियों के व्यापक विस्तार पर चर्चा करते हुए कहा कि सच्चा कार्यकर्ता प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अनुकूलता से काम करता है। तत्पश्चात भारतीय गोवंश रक्षण–संवर्द्धन परिषद के न्यासी श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंहल ने कार्यकर्ता को किस तरह अपने व्यवहार को रखना चाहिए, इस विषय पर प्रकाश डाला।

अगले सत्र में विश्व हिन्दू परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष मा. आलोक कुमार जी ने कहा कि भारतीय नारी भारत माता, दुर्गा, कमला और सरस्वती का स्वरूप है। इतिहास में अनुसूया, गार्गी, जीजाबाई और भगिनी निवेदिता ने समाज को दिशा दी, आज भी नारी नेतृत्व हर क्षेत्र में सिद्ध है। उन्होंने आह्वान किया कि महिलाएँ घर की जिम्मेदारी निभाते हुए गोसंवर्धन को जनआंदोलन बनाएँ, पहला ग्रास गौमाता को अर्पित करें, पॉलिथीन का त्याग करें, गौतस्करी रोकने के लिए सजग रहें तथा गोबर–गोमूत्र आधारित उत्पादों, सेल्फ हेल्प ग्रुप और मॉडल गौशालाओं के माध्यम से आत्मनिर्भरता बढ़ाएँ।

गोरक्षा विभाग की उपाध्यक्षा श्रीमती डॉ. माधवी गोस्वामी जी ने गोबर, गोमूत्र, गोदुग्ध, गोदधि एवं घृत से निर्मित पंचगव्य उत्पादों एवं प्राकृतिक सौंदर्य प्रसाधनों के निर्माण की विधि बताई। उन्होंने रासायनिक उत्पादों के दुष्प्रभावों की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए गौआधारित उत्पादों को सुरक्षित एवं स्वास्थ्यवर्धक विकल्प बताया।

गोरक्षा विभाग के अखिल भारतीय प्रशिक्षण प्रमुख श्री गोपाल भाई सुतारिया ने गौशाला प्रबंधन एवं गौकृपा अमृतम तथा गौसेवा के व्यावहारिक पक्षों पर मार्गदर्शन दिया। महिला नेतृत्व एवं सामाजिक दिशा मुम्बई क्षेत्र की क्षेत्र गोभक्त महिला प्रमुख श्रीमती सुनीता देशमुख ने कहा कि एक संगठित महिला समाज को नई दिशा दे सकती है। उन्होंने घर–घर गोसंरक्षण का संदेश पहुँचाने तथा महिला टोलियों के विस्तार

पर बल दिया। विश्व हिन्दू परिषद के मातृशक्ति की अखिल भारतीय सह संयोजिका श्रीमती सरोज सोनी ने पंच परिवर्तन के अनुकरणीय कार्य पर प्रकाश डाला। गोरक्षा विभाग के महामंत्री श्री श्रीनारायण अग्रवाल जी ने आदर्श गौशाला के प्रबन्धन के लिए विशेष बल देते हुए कहा कि गौशाला में गाय तभी स्वस्थ्य रह कर बच सकती हैं, जब उन्हें प्रर्याप्त पौष्टिक चारा दिया जाए। इसके लिए नेपियर घास का व्यापक स्तर पर उत्पादन किया जाना चाहिए। तत्पश्चात गोरक्षा विभाग के अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख श्री दिनेश उपाध्याय जी ने संगठनात्मक, प्रशिक्षणात्मक एवं आर्थिक पक्ष पर प्रकाश डाला।

तृतीय दिवस गोरक्षा विभाग के उपाध्यक्ष मा. रामस्वरूप चौहान जी ने सम्मेलन में आई हुई महिलाओं का अनुभव सुना एवं उनके चिंतन को साँझा किया गया। उनके निराकरण पर प्रकाश डाला। इस सत्र में देश के विभिन्न प्रांतों से आई महिलाओं ने गौसेवा से जुड़े अपने अनुभव साँझा किए। कई महिला गौभक्तों ने गौमाता के प्रत्यक्ष चमत्कार की भी सच्ची घटनाओं से संबंधित अनुभव साँझा किया। इस अवसर पर गोरक्षा के क्षेत्र में काम कर रहीं महिलाओं को सम्मानित भी किया गया। तत्पश्चात काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान संकाय एवं गोरक्षा विभाग के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. गुरु प्रसाद जी ने गाय से सम्बंधित सरकार द्वारा चलाए जा रही गोरक्षा की विभिन्न योजनाओं पर प्रकाश डाला। सम्मेलन के दौरान भारतीय गोवंश रक्षण–संवर्धन परिषद की संगठनात्मक (केन्द्रीय संच टोली) की बैठक भी सम्पन्न हुई, जिसमें संगठन के निम्न बिन्दुओं पर गहन विचार–विमर्श किया गया।

तीन दिवसीय सम्मेलन में निम्न विषयों पर गहन चर्चा एवं विमर्श किया गया–गौविज्ञान एवं पंचगव्य चिकित्सा, जैविक एवं गौआधारित खेती, ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं स्वदेशी उद्योग, देशी नस्ल संरक्षण, गोचर भूमि संरक्षण, अवैध गौवध एवं गौतस्करी की चुनौतियाँ, पर्यावरण संतुलन एवं साँस्कृतिक पुनर्जागरण, प्रस्तावित चर्चा बिंदु।

सम्मेलन में निम्न विषयों पर राष्ट्रीय स्तर पर संवाद की आवश्यकता व्यक्त की गई। गौवंश को "राष्ट्रीय सांस्कृतिक धरोहर" घोषित करने की पहल, गोपाष्टमी को राष्ट्रीय पर्व का स्वरूप, कठोर केंद्रीय गोहत्या निषेध कानून, गौतस्करी को गैर–जमानती अपराध घोषित करना, गौअभयारण्य स्थापना एवं गोचर भूमि संरक्षण हेतु प्राधिकरण, पंचगव्य आधारित अर्थव्यवस्था को राष्ट्रीय नीति में स्थान, शैक्षणिक पाठ्यक्रम में गोसंरक्षण विषय का समावेश, संगठन की वर्तमान गतिविधियों की समीक्षा, प्रांतवार महिला टोलियों की बैठक, सांगठनिक रणनीतियों का निर्माण, आगामी कार्ययोजना निर्धारण पर विस्तृत चर्चा हुई। अखिल भारतीय विधि प्रमुख एवं क्षेत्र गोरक्षा प्रमुख श्री शशांक शेखर ने जयपुर की राष्ट्रीय बैठक में पारित प्रस्ताव का पुर्नपाठ एवं आगामी 27 मई, 2026 पर होने वाले बकरीद में गोवध को रोकने हेतु सरकार के विभिन्न प्रशासनिक अधिकारियों को ज्ञापन सौंपने के प्रारूप पर चर्चा किया।

समापन सत्र को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय संरक्षक श्री हुकुमचंद सांवला जी ने गौसंस्कृति को राष्ट्र की साँस्कृतिक चेतना का आधार बताया। उन्होंने कहा कि गौ केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं, बल्कि भारतीय परिवार, कृषि, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण की धुरी है। राष्ट्रीय गोरक्षा प्रमुख श्री दिनेश उपाध्याय जी ने कहा कि भारतीय सँस्कृति में गौ और नारी दोनों पूजनीय हैं, जब मातृशक्ति गौसेवा का संकल्प लेती है, तो समाज में व्यापक परिवर्तन संभव होता है।

यह तीन दिवसीय अखिल भारतीय गौभक्त महिला सम्मेलन मातृशक्ति के संगठन, प्रशिक्षण एवं वैचारिक सुदृढ़ीकरण का महत्वपूर्ण पड़ाव सिद्ध हुआ। डॉ. सूचि वर्मा के सुव्यवस्थित संचालन, श्रीमती नंदिनी भोजराज के समन्वय तथा समस्त केंद्रीय एवं प्रांतीय नेतृत्व के मार्गदर्शन में यह आयोजन अनुकरणीय संगठनात्मक मॉडल के रूप में स्थापित हुआ। सम्मेलन ने स्पष्ट किया कि गौसंरक्षण केवल भावनात्मक विषय नहीं बल्कि सामाजिक, साँस्कृतिक, आर्थिक एवं राष्ट्रीय पुनर्जागरण का आधार है।

कार्यक्रम की व्यवस्थाओं का दायित्व एवं मार्गदर्शन गोरक्षा विभाग के संरक्षक श्री संतराम गोयल जी ने संभाला। उनके सहयोगी गोरक्षा विभाग के सह गोरक्षा प्रमुख श्री विजेन्द्र तंवर जी रहे। इन्द्रप्रस्थ प्रान्त के गोरक्षा प्रमुख श्री जगवीर गौड़, प्रान्त गोभक्त महिला प्रमुख श्रीमती सिम्मी जैन ने टोली के साथ कार्यक्रम को सूचारू रूप से व्यवस्थित रखने में महत्वपूर्ण भुमिका निभाई, तत्पश्चात स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति में आभार प्रदर्शन, पूर्णता मंत्र, वन्देमातरम् गीत के साथ सम्मेलन का विधिवत राष्ट्र एवं गौसंरक्षण संकल्प के साथ सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

gosampada@gmail.com

झण्डेवाला माता मंदिर का तैंतालिसवाँ वार्षिकोत्सव एवं छप्पन भोग कार्यक्रम

श्री झण्डेवाला माता मंदिर में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष 43वाँ वार्षिक उत्सव एवं 56 प्रकार का माँ को भोग अर्पण किया। दिनांक 8 फरवरी 2026 दिन रविवार प्रातः 7:00 बजे से 9:00 बजे तक मोहन दुर्गा संकीर्तन मण्डल ने माँ का गुणगान किया, उसके बाद झण्डेवाली माँ का श्रृंगार मोहन दुर्गा संकीर्तन मण्डल द्वारा किया गया। तत्पश्चात् भण्डारा प्रारम्भ हुआ। 10:00 बजे से 12:30 बजे तक सेवादार संकीर्तन मण्डल द्वारा माँ का गुणगान किया गया। माँ का 56 भोग प्रसाद मुख्य दरबार पर रखवाया गया। दोपहर 12:30 से 03:30 बजे तक पार्श्वगायक श्री भरत कुमार जी एवं 03:30 से 06:00 बजे तक राधारानी लाडली पूनम दीदी जी ने माँ का सुन्दर गुणगान किया, दीदी जी को स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया गया।

मंच पर उपस्थित मंदिर के ट्रस्टी एवं प्रबंध समिति के पदाधिकारियों का श्री हरीश मित्रा जी के द्वारा परिचय कराया गया। श्री देवेन्द्र कपूर जी के द्वारा ट्रस्टियों का स्वागत किया गया। विश्व हिन्दू परिषद के वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के महामंत्री चम्पत राय जी ने झंडेवाला माता मंदिर तथा राम जन्मभूमि के विषय में मार्गदर्शन प्रदान किया। उन्होंने सभी भक्तों को 56 भोग भंडारे की हार्दिक बधाई दी तथा श्रद्धालुओं से आग्रह किया कि आप सभी अयोध्या पधारकर श्रीरामलला के दर्शन अवश्य करें। श्री नीरज दनौरिया जी–क्षेत्रीय संगठन मन्त्री, इन्द्रस्थ दिल्ली का सम्मान किया गया।

मोहन दुर्गा संकीर्तन मण्डल के सभी सदस्यों, भक्तों द्वारा प्रतिवर्ष इसी प्रकार 56 प्रकार भोग भण्डारे आदि माँ के कार्यक्रम चलते रहते हैं, संकीर्तन मण्डल ने सहयोगी बन्धुओं/माताओं एवं बहनों को शुभकामनायें दी। माँ झण्डेवाली की आरती के पश्चात कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

संपूर्ण गोरक्षा आंदोलन
शिवरात्री के दिन महाआरती का प्रशासन से निवेदन

संभाजीनगर जिले में बढ़ती हुई गोवंश की तस्करी व बे–कायदा कत्लखाने बंद करने चाहिए। इस मांग को लेकर आज छत्रपति संभाजीनगर में खडकेश्वर महादेव मंदिर में बैनर और ढोल के साथ संभाजीनगर जिल्हा गोरक्षा विभाग द्वारा आंदोलन किया गया और इसके बाद पुलिस आयुक्तालय में सब कार्यकर्ताओं द्वारा उपायुक्त श्री देशमुख जी को निवेदन दिया गया।

इस अवसर पर संजय अप्पा बारगजे (क्षेत्र प्रमुख नैतिक मूल्य शिक्षण) ने पूर्ण गोरक्षा करने की शपथ कार्यकर्ता को दिलाई और गोरक्षा के कार्यकर्ता संपूर्ण जिले में पूर्ण गो हत्या बंदी के लिए सजग रहेंगे, ऐसा संदेश दिया।

इस अवसर पर राजेश जैन (प्रांत गोरक्षा प्रमुख) ने गोवंश हत्या रोकने के लिए गोवंश हत्या बंदी कानून की सख्त आवश्यकता पर बल देते हुए गोआधारित कृषि व गौउत्पाद के उपयोग का मानस नागरिकों का बने, इससे ही पूर्ण गोरक्षा हो पायेगी इस पर जोर दिया।

rajjain010136@gmail.com

दक्षिण गुजरात में नव निर्मित मंदिर का लोकार्पण

भारतीय जनसेवा संस्थान की ओर से देशभर में जनजाति क्षेत्रों में आस्था को दृढ़ता प्रदान करने के लिए मंदिर निर्माण का अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में गुजरात प्रांत के तापी जिले के करंजखेड़ गाँव में एक नव निर्मित श्रीराम दरबार मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन 08 फरवरी 2026 को अत्यंत हर्षोल्लास के साथ किया गया। यह नव निर्मित मंदिर दक्षिण गुजरात प्रांत के धर्मप्रसार विभाग के निधि प्रमुख श्री राजेश मित्तल जी और उनके परिवार के द्वारा बनवाया गया है। प्राण प्रतिष्ठा के उपरांत अर्चन पूजन के लिए लोकार्पण किया गया। उसी दिन स्थानीय हजारों बनवासियों के साथ–साथ सूरत शहर के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में हवन, यज्ञ, सत्संग, भजन समारोह और धर्मसभा का भी आयोजन किया गया।

अखिल भारतीय ट्रस्ट जनसेवा संस्थान के उपाध्यक्ष श्री हनुमान सोनी जी, मंत्री श्री धर्मेन्द्र भाई पटेल तथा देवगिरि प्रांत के निधि प्रमुख श्री अजय शर्मा जी ने धर्मसभा को संबोधित किया। मंदिर प्रतिष्ठाता श्री राजेश मित्तल जी ने उपस्थित सभी सज्जनों को धन्यवाद देते हुये आभार प्रकट किया। इसी कार्यक्रम में दक्षिण गुजरात प्रांत के प्रांत प्रमुख श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, सह प्रमुख श्री महेन्द्र भाई पटेल, परियोजना प्रमुख श्री लक्ष्मीनारायण प्रजापति, श्री मिठालाल जी केला, श्री किरण भाई बोरा और श्रीमती मैना बैन भी उपस्थित थीं। ज्ञातव्य हो कि दानदाताओं के सहयोग से दक्षिण गुजरात प्रांत के बनवासी क्षेत्रों में अब तक 55 मंदिरों का निर्माण करते हुए लोकार्पण किया गया है।

jansewa@gmail.com

नाबालिग लड़की को ब्लैकमेल और शारीरिक शोषण करने पर मुस्लिम व्यक्ति की गिरफ्तारी

कुरुक्षेत्र के एक मुस्लिम व्यक्ति के द्वारा एक नाबालिग लड़की के साथ शारीरिक शोषण, उसकी अश्लील फोटो व वीडियो बना कर ब्लैकमेल करने के आरोप में महिला थाना कुरुक्षेत्र में मुकदमा दर्ज किया गया है। बता दें कि विश्व हिंदू परिषद व बजरंग दल के कार्यकर्ताओं की मुस्तैदी से आरोपित व्यक्ति के खिलाफ प्रशासन के सहयोग से पॉक्सो एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज करके आरोपी को गिरफ्तार किया गया।

लड़की की माँ गाँव जांबा (खेड़ी ब्राह्मण) की रहने वाली है। उसने अपनी शिकायत में बताया कि उसकी 16 वर्षीय लड़की, जिसकी मुस्लिम व्यक्ति नाम बदलकर राजू, मुस्लिम की पत्नी नसरीन खातून व उनके साथी अली कबाड़ी के सहयोग से उसकी लड़की के अश्लील फोटो, वीडियो बनाकर व जान से मारने की धमकी देकर पिछले कई महीनों से

उसके साथ शारीरिक संबंध बना रहा था। मेरी लड़की सहमी हुई व डरी–डरी सी रहती थी। काफी टटोलने पर दो दिन पहले उसने मुझे मुस्लिम व्यक्ति (जिसके चार बच्चे हैं) घटना के बारे में बताया, तत्पश्चात मैंने महिला आयोग में उक्त मुस्लिम व्यक्ति के खिलाफ शिकायत दर्ज की है। विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल व समाज के लोगों के सहयोग से उक्त मुस्लिम व्यक्ति के खिलाफ कार्यवाही की गई है। पुलिस अधिकारी ASI सरोज ने बताया कि आरोपी के खिलाफ posco act की धारा 6 व बी एस एन की धारा 351 (3), धारा 3 (5) के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। मुकदमा नम्बर 16 dtd 13/2/26 है, पीड़ित लड़की का मेडिकल व 164 के बयान दर्ज हो चुके हैं। समाज के लोगों ने मांग की है कि उस मुस्लिम, उसकी पत्नी नसरीन खातून व साथी अली कबाड़ी के खिलाफ सख्त से सख्त कानूनी कार्यवाही करके सजा देनी चाहिए, ताकि दुबारा कोई ऐसी धीनौनी व शर्मनाक घटना को अंजाम ना दे सके। लव जिहाद की ऐसी घटनाओं पर रोक लगाने के लिए विश्व हिन्दू परिषद व बजरंग दल ने कड़ा रुख अपनाया व उसके सहयोगियों के खिलाफ भी सख्त कार्यवाही करने की प्रशासन से अपील की।

rajesh.rap73@gmail.com

महासभा के अध्यक्ष महेन्द्र नाहटा और प्रधान न्यासी सुरेश गोयल का अभिनंदन

पद नहीं, व्यक्तित्व ही संस्था की पहचान होता है : मुनि विमलकुमार

नई दिल्ली, 16 फरवरी 2026। राजधानी के अणुव्रत भवन में उस समय श्रद्धा, विश्वास और वंदना के स्वर एक साथ गूँज उठे, जब संस्था शिरोमणि जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के नवगठित ट्रस्ट बोर्ड के प्रधान न्यासी श्री सुरेश गोयल एवं श्री महेंद्र नाहटा के अध्यक्ष मनोनीत होने के उपलक्ष्य में अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। यह आयोजन जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, दिल्ली एवं आचार्य श्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान एवं परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण के विद्वान शिष्य शासनश्री मुनिश्री विमलकुमार जी एवं बहुश्रुत मुनिश्री उदित कुमार जी का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। मंगलाचरण से प्रारंभ हुए इस समारोह में वातावरण श्रद्धा, अनुशासन और संघनिष्ठा की भावधारा से ओत–प्रोत रहा।

शासनश्री मुनि विमल कुमार जी ने कहा कि किसी भी संस्था की वास्तविक शक्ति उसके पदाधिकारी होते हैं। पद केवल दायित्व का प्रतीक है, किंतु उसे सार्थक बनाती है–विनम्रता, संगठन निष्ठा और दूरदर्शी नेतृत्व क्षमता। तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्य महाश्रमण जी के नेतृत्व में संचालित सँस्थाओं में इन गुणों का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। यही समन्वय समाज के विकास का मूलाधार है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि महासभा का नव मनोनीत नेतृत्व इन मूल्यों को और सशक्त करेगा। बहुश्रुत मुनिश्री उदितकुमार जी ने कहा कि जिस संगठन के कार्यकर्ताओं में धार्मिकता के साथ सामाजिकता–संवेदनशीलता का भाव होता है, उसका इतिहास स्वतः स्वर्णिम बन जाता है। उन्होंने कहा कि श्री सुरेश गोयल और श्री महेंद्र नाहटा में इन दोनों गुणों का सशक्त समावेश है। उनकी संघनिष्ठा, सेवा–भाव और समर्पण की साधना उन्हें इस दायित्व तक लाई है। उन्होंने कामना की कि उनका नेतृत्व महासभा को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाएगा। मुनि अभिजीत कुमार जी ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए नव नेतृत्व को कर्तृत्वशील एवं संवेदनशील बनने की प्रेरणा दी।

आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल पटवारी जैन ने कहा कि उनकी सुदीर्घ सेवाएँ, विनम्र व्यवहार और संघ के प्रति अटूट निष्ठा ही उनके चयन का आधार बनी है। यह केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि दिल्ली समाज के लिए गौरव का क्षण है। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष श्री सुखराज सेठिया ने कहा कि दोनों विभूतियाँ उदारता और दानशीलता की सजीव प्रतिमूर्ति हैं। समाजहित और संघकार्य के प्रति उनका समर्पण सदैव प्रेरक रहा है। उन्होंने विश्वास जताया कि उनके नेतृत्व में संगठन नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ेगा। प्रवास व्यवस्था समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री बजरंग बोथरा ने कहा कि दोनों ही महान विभूतियाँ महासभा के इतिहास में नया अध्याय लिखेंगी। इस बार महासभा में बड़ी संख्या में दिल्ली का प्रतिनिधित्व होना हम सबके लिए विशेष प्रसन्नता और गर्व का विषय है। उन्होंने कहा कि यह अवसर केवल अभिनंदन का नहीं बल्कि उत्तरदायित्व के नए संकल्प का भी है।

श्री महेंद्र नाहटा ने गहन श्रद्धा के साथ गुरु के प्रति समर्पण भाव व्यक्त करते हुए कहा कि किसी भी व्यक्ति की सफलता का वास्तविक आधार गुरु कृपा ही होती है। हमारी सभी संस्थाओं की आत्मा भी गुरु हैं, उनकी दृष्टि, उनका मार्गदर्शन और उनका आशीर्वाद ही हमें दिशा देता है। उन्हें जो दायित्व प्राप्त हुआ है, वह उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि गुरु अनुकम्पा का प्रतिफल है। गुरु चरणों में पूर्ण समर्पण के साथ उन्होंने संकल्प व्यक्त किया कि वे महासभा के कार्यों को नई ऊँचाइयों तक ले जाने का सतत प्रयास करेंगे। वहीं श्री सुरेश गोयल ने अपने विचारों में महासभा के गौरवपूर्ण इतिहास का स्मरण कराते हुए बताया कि जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा की स्थापना आचार्य श्री कालूगणी के शासनकाल में हुई थी और यह तेरापंथ धर्मसंघ की सबसे प्राचीन संस्था है, जिसने 113 वर्ष की प्रेरक यात्रा पूर्ण की है। इस शिरोमणि संस्था के सतत विकास के लिए प्रत्येक कार्यकर्ता की सक्रिय सहभागिता आवश्यक है। गुरु को उन्होंने सिद्धत्व का सेतु और जीवन की सार्थकता का परम आयाम बताते हुए कहा कि गुरु मार्ग ही हमें आत्मोन्नति और संघविकास की ओर अग्रसर करता है। कार्यक्रम का कुशल संयोजन दिल्ली सभा के महामंत्री श्री प्रमोद घोड़ावत ने किया।

समारोह के अंत में वातावरण एक ही संकल्प से गूंज उठा–नेतृत्व केवल अधिकार नहीं, उत्तरदायित्व है और उत्तरदायित्व तभी सफल होता है, जब उसमें संघ, समाज और साधना–तीनों के प्रति समर्पण हो।

lalit.r.garg@gmail.com

भारतीय जनसेवा संस्थान द्वारा गुजरात प्रांत के तापी जिले के करंजखेड़ गाँव में
नव निर्मित श्रीराम दरबार मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव में उपस्थित प्रांत के पदाधिकारी व कार्यकर्ता

छत्रपति संभाजीनगर में संपूर्ण गोरक्षा की माँग को लेकर पुलिस आयुक्त को ज्ञापन सौंपते परिषद के कार्यकर्ता

बजरंग दल पंजाब की दो दिवसीय बैठक को संबोधित करते
विहिप क्षेत्र संगठन मंत्री श्री नीरज दौनेरिया जी तथा बैठक में उपस्थित प्रांत के पदाधिकारी व कार्यकर्ता

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6
email : hinduvishva@vhp.org
website : www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 13.03.2026
प्रेषण तिथि : 14-15 (अग्रिम-पाक्षिक)

राजस्थान सरकार

राजस्थान ₹ बजट

बजट समृद्ध राजस्थान का 2026-27

समग्र विकास

खुशहाल किसान- समृद्ध राजस्थान

- विशिष्ट उत्पादों की अंतरराष्ट्रीय पहचान हेतु राज गिफ्ट योजना
- पर्यावरण संरक्षण हेतु सभी जिला मुख्यालयों पर उन्नत नमो नर्सरी
- 50 हजार किसानों को तारबंदी पर मिलेगा अनुदान
- हरित बजट के लिए ₹33,476 करोड़ का प्रावधान

विकसित होता सड़क तंत्र

- 42 हजार किलोमीटर से अधिक सड़कों का विकास किया गया
- आरयूबी एवं आरओबी पर ₹920 करोड़ का व्यय किया जाएगा
- इंफ्रास्ट्रक्चर पर रिकॉर्ड ₹3427 करोड़ का पूंजीगत खर्च होगा

महिला सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध सरकार

STRI योजना: (Safety Training Resource Initiative)

- आत्मरक्षा, महिला कानून एवं साइबर सुरक्षा की दी जाएगी जानकारी
- एक लाख महिलाओं को विषय विशेषज्ञों द्वारा ट्रेनिंग
- व्यापक व समग्र प्रशिक्षण का नवाचार

खेलो राजस्थान यूथ गेम्स

- ग्राम पंचायत, ब्लॉक, जिला एवं राज्य स्तर पर आयोजन किये जाने के लिए, आगामी वर्ष में **₹50 करोड़ का** प्रावधान

शिक्षा से कौशल, कौशल से काम

- **'School to Work' कार्यक्रम के तहत:** प्रत्येक जिले में एक विद्यालय उन्नत व्यावसायिक उच्च माध्यमिक विद्यालय में क्रमोन्नत किया जाएगा
- **कस्टमर-सेंट्रिक क्षेत्रों में वैश्विक अवसरों हेतु:** 1000 युवाओं को अंग्रेजी, जापानी, फ्रेंच, जर्मन व कोरियन भाषाओं में प्रशिक्षण

महिला सशक्तीकरण

- मुख्यमंत्री नारी शक्ति उद्यम प्रोत्साहन योजना में मिलने वाले ऋण की सीमा 50 लाख से बढ़ाकर ₹1 करोड़
- लखपति दीदी ऋण सीमा ₹1 लाख से बढ़ाकर ₹1.50 लाख

प्रतियोगी परीक्षाओं में पारदर्शिता की ओर बढ़ता राजस्थान

- नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (NTA) की तर्ज पर राजस्थान स्टेट टेस्टिंग एजेंसी (RSTA) की स्थापना

धरोहर संरक्षण की नई पहल

- झुंझुनूं, चूरू व सीकर में 660+ ऐतिहासिक हवेलियों व धरोहर का सौंदर्यीकरण एवं संरक्षण 2 वर्षों में ₹200 करोड़ व्यय

युवाओं को सरकारी नौकरी के बढ़ते अवसर

- 1 लाख सरकारी नौकरियों का वार्षिक कलैण्डर जारी
- 1 लाख से अधिक सरकारी नियुक्तियां
- निजी क्षेत्र में 2 लाख से अधिक रोजगार के अवसर सृजित
- 1 लाख 54 हजार पदों पर भर्तियां प्रगति पर

दुर्घटना से सुरक्षा, अंतिम यात्रा में सम्मान

- रोड एक्सीडेंट एवं आपातकालीन चिकित्सा के लिए राज-सुरक्षा योजना प्रारंभ
- मृतक को ससम्मान गंतव्य तक पहुंचाने हेतु निशुल्क **मोक्ष वाहिनी योजना**

पोषण क्रांति की ओर अग्रसर राजस्थान

- सभी ग्राम पंचायतों में 11,000 अमृत पोषण वाटिकाओं का निर्माण
- मिड डे मील के लिए स्थानीय फल और सब्जी उपलब्ध कराने पर जोर

उद्यमिता और नवाचार

- **'iStart एम्बेसडर प्रोग्राम' प्रारम्भ** 7,500 पंजीकृत स्टार्टअप्स के साथ सशक्त स्टार्टअप इकोसिस्टम, उभरते स्टार्टअप्स की मेंटरशिप व स्केलिंग

डिजिटल कृषि मिशन

- **राज-एम्स:** किसानों को मौसम आधारित बुवाई व फसल निगरानी सुविधा हेतु **₹77 करोड़ प्रावधान**

स्वच्छ जल, सुरक्षित भविष्य

- प्रदेश के दूरदराज क्षेत्रों में जल गुणवत्ता परीक्षण हेतु **Mobile Water Testing Labs** का संचालन
- 83 शहरों में ₹2530 करोड़ के पेयजल संबंधी कार्य
- अमृत 2.0 के तहत 3 लाख पेयजल कनेक्शन होंगे जारी

सशक्त सिंचाई, समर्थ किसान

- सिंचाई सुविधाओं से संबंधित विभिन्न कार्यों के लिए ₹11 हजार 300 करोड़ से अधिक का प्रावधान
- यमुना जल को शेखावाटी क्षेत्र में लाने के लिए ₹32 हजार करोड़ के कार्य

वंचित वर्ग के लिए सुरक्षा और भविष्य

- **प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण):** दूसरे चरण में 28 लाख से अधिक पात्र परिवारों को आवास
- **राज पहल कार्यक्रम:** घुमंतू, अर्द्धघुमंतू व श्रमिक वर्ग के लिए **"स्कूल ऑन व्हील्स"**

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी-82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस-1, नई दिल्ली-110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी